श्री नाथ सिद्ध कवचम्

हिन्दी अनुवाद तथा पाठ विधि सहित

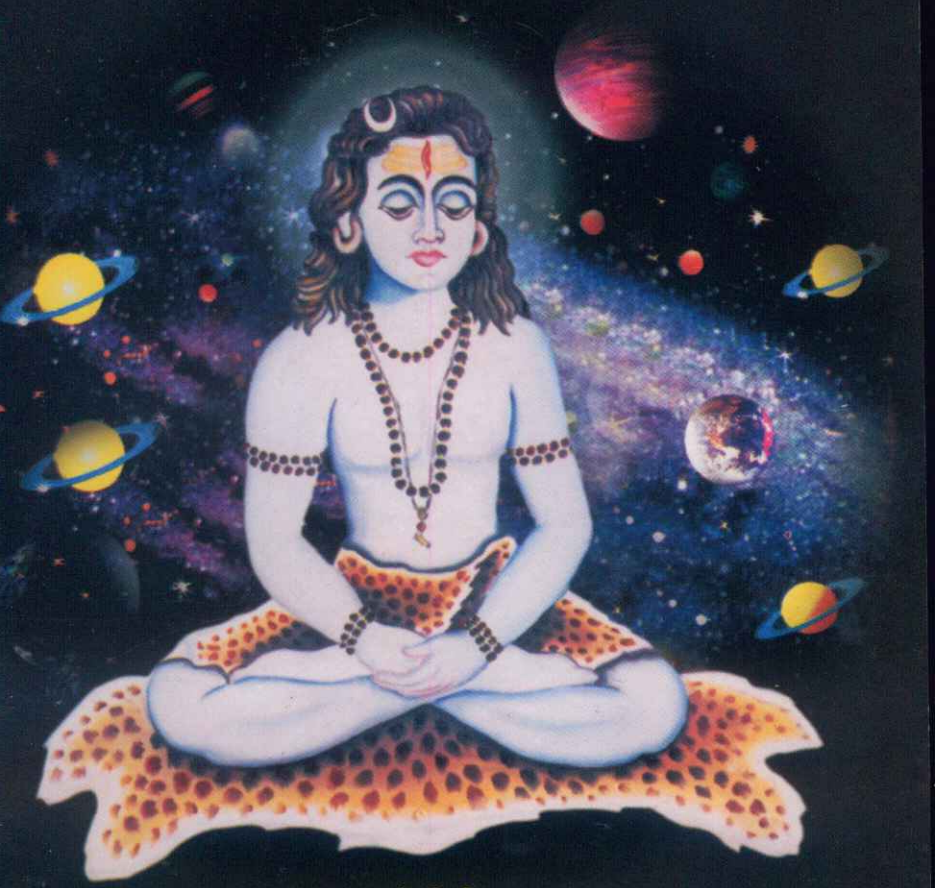

लेखक-योगी विलासनाथ

प्रकाशक

अखिल भारत वर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड हरिद्वार

फोन : (01334) 226583

अहंमेवःस्मि गोरक्ष मद्रूपं तन्निबोधडत। योग मार्ग प्रचाराय मयारूप मिदं धृतम्।।

श्री नाथ सिद्ध कवचम्

हिन्दी अनुवाद तथा पाठ विधि सहित

श्री गोरक्ष रहस्यम्

श्री गोरक्ष सूक्तम् ● आरती एवं भजन

लेखक

योगी विलासनाथ

© सर्वाधिकार सुरक्षित

© No L-26624/2006

प्रकाशक :

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

फोन : 01334-226583

18 जुलाई 2008 (आषाढ़) गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर मुद्रित

तृतीय संस्करण 2000 प्रति] [मूल्य 45/-

इस पुस्तक के किसी भाग एवं अंश की नकल करना गैर कानूनी होगा।

आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी
शुभ आशीर्वाद

आपके द्वारा रचित ग्रन्थ श्री गोरक्ष ध्यानम् श्री नाथ सिद्ध कवचम् तथा गोरक्ष सूक्तम् एवं गुरू गोरक्षनाथ जी की आरतियों का मैंने अध्ययन किया। महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी के संबंध में यूँ तो अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हैं लेकिन आपने उन सभी ग्रंथों में से महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी से संबंधित पहले से ही प्रचलित बड़े बड़े ग्रन्थों का सार आपने अपने द्वारा रचित ग्रन्थ में सम्पूर्ण रूप से प्रकाशित कर दिया न केवल महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी के संदेश सर्व साधारण तक पहुँचाने का प्रयास किया है बल्कि महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी के उद्देश्य को सर्व साधारण तक पहुँचाने का असाधारण प्रयास किया है। इसलिए आप बधाई एवं प्रशंसा के पात्र हैं।

आपका यह प्रयास बहुत सराहनीय है इस ग्रन्थ के द्वारा सर्व साधारण जिज्ञासुओं तक महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी के संदेश को पहुँचाने की सहायता मिलेगी।

मेरी आपके इस महान कार्य की महानता के लिए शुभ कामना स्वीकार करें।

शुभेच्छुक

(महन्त अवेद्यनाथ जी)
सभापति (योगी महासभा)
श्री गोरक्ष पीठाधीश्वर (गोरखपुर)
पूर्व सांसद (लोकसभा)

आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी
शुभ आशीर्वाद

आपके द्वारा रचित श्री नाथ सिद्ध कवचम् इस ग्रंथ को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि आपने श्री गुरु गोरक्षनाथ जी, नवनाथ, चौरासी सिद्धों की भक्ति, योगसाधना एवं मंत्र तंत्र उपासना का बड़े ही सुन्दर संस्कृत श्लोकों में रचना करके सभी नाथ योगियों, साधु, सन्तों एवं भक्तजनों को मनवांछित फल प्राप्त करने का सरल सुलभ उपासना का स्त्रोत दिया गया है।

इस ग्रंथ रचना के द्वारा नाथ सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार एवं भक्ति साधना का लाभ श्री सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथजी की कृपा से सर्वत्र हितकारक होगा। आपका किया हुआ यह प्रयास प्रशंसनीय एवं मंगलकारक है जो कि जिज्ञासुओं की अपेक्षापूर्ति करके सद्भावना अर्जित की गयी है।

हम आशा करते हैं कि भविष्य काल में भी आप नाथ सिद्ध सम्प्रदाय से सम्बन्धित ऐसे ग्रंथ रचनायें करने में यशस्वी होंगे और प्रचार-प्रसार कार्य में बड़ा योगदान होगा। सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथजी की कृपा अनुकंपा से आप अपने इस सद्कार्यों को करते हुए यशोभागी बनते रहें।

शुभकानाओं सहित।

शुभेच्छुक

(महन्त चान्दनाथजी योगी)
उपसभापति (योगी महासभा)
मठाधीश्वर, श्री मठ अस्थल बोहर
रोहतक (हरियाणा)

आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी

शुभ आशीर्वाद

श्री श्री महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी को आदेश! आदेश!! आदेश!!!

श्री नाथ सिद्ध कवचम् यह ग्रंथ का अवलोकन करते हुए योगीश्वरों एव भक्तजनों के अंतर्भाव प्रकट करते हुए अति प्रसन्नता प्राप्त होती है। जो कि हमारे नाथ सम्प्रदाय के मुख्य मंत्र, विधि, अनुष्ठान, उपासना, पाठ आदि करने के लिए योगी विलासनाथ द्वारा रचित यह ग्रंथ अनेक साधु, सन्त, नाथ योगी, जपी तपी एवं भक्तजनों की जानकारी हेतु तथा प्रचार-प्रसार के लिए यह ग्रंथ रचना बड़े संजीदा ढंग से की गयी है। जिसमें विरक्त एवं गृहस्थ सभी जिज्ञासु प्रवृत्ति वाले उपासक सहज भाव से श्री नाथ उपासना कर सकते हैं।

एकान्त स्थल में मन्दिर, समाधि, धूना के पास बैठकर यह ग्रंथ मण्डल तैयार करके उसके सन्मुख आसन लगाकर निर्गुण स्वरूप एवं सगुण स्वरूप दोनों ही प्रकार से भावातीत अवस्था में श्री ॐकार आदिनाथ जी भी गुरू गोरक्षनाथ जी एवं नवनाथ चौरासी सिद्धों की उपासना अनुष्ठान करके उनके आशीर्वाद, कृपा प्राप्त करने में सहज, सुलभ सुविधा प्राप्त हो सकती है। जोकि नाथ सम्प्रदाय के अनुभवी गुरु शिष्य परम्परा अनुसार मंत्र-विधि अनुभूति का इस छोटे से ग्रंथ के द्वारा प्रकट किये गये हैं। इस ग्रंथ के रचयिता योगी विलासनाथ का परिश्रम देखते हुए अनुभूति होती है कि उसे श्री गुरू गोरक्षनाथ जी नवनाथ, चौरासी सिद्ध एवं आदरणीय गुरूजन, महन्त, पीरों की कृपा शुभाशीर्वाद प्राप्त हुआ है।

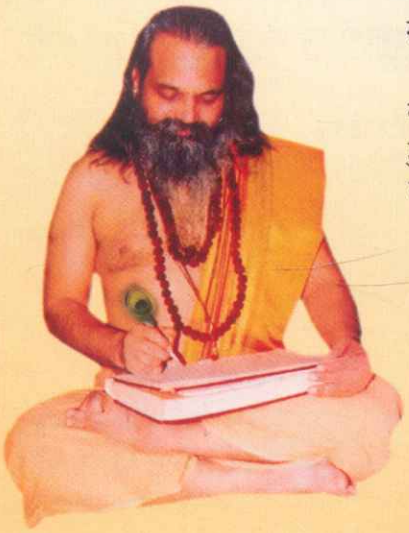

अत: श्री गुरू गोरक्षनाथ जी से प्रार्थना करते हैं कि आपके चरण कमल रज प्राप्त होते हुए उपासना रत इसे सतत् कार्य अनुभूति होती रहेगी।

इति शुभम्

शुभ आशीर्वाद शुभेच्छुक

योगी आनन्दनाथ जी

(महामन्त्री)

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष

बारह पंथ योगी महासभा, हरिद्वार

''ॐ शिव गोरक्ष योगी''

अनुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	नित्य–विधि (गणेश वन्दना–सद्गुरु स्मरण)	१
२.	श्री गोरक्ष ध्यानम्	४
३.	श्री गोरक्ष रहस्यम्	७
४.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (पाठ के विधि–विधान)	१६
५.	श्री नाथ सिद्ध कवचम्	१९
६.	श्री गोरक्ष सूक्तम्	४४
७.	प्रसाद भोग विधि	६२
८.	गुरू गोरक्षनाथ आरती (प्रातः)	६३
९.	गुरू गोरक्षनाथ आरती (संध्या)	६४
१०.	नाथ सम्प्रदाय की पारम्परिक प्रार्थना	६७
११.	ग्रंथ सारांश एवं विधि	६९
१२.	हवन विधि	७४
१३.	ग्रंथ अनुष्ठान विषय में कुछ नियम	७७
१४.	संक्षिप्त विधि	७९
१५.	गोरक्षनाथ मन्दिर (हरिद्वार) के अंतर्गत कुछ प्रचलित श्लोक	८३
१६.	भजन–शिव जती गोरक्ष	८८
१७.	भजन–श्री नाथ दर्शन	९०
१८.	उपसंहार	९१
१९.	मूल्य सूचि	९२

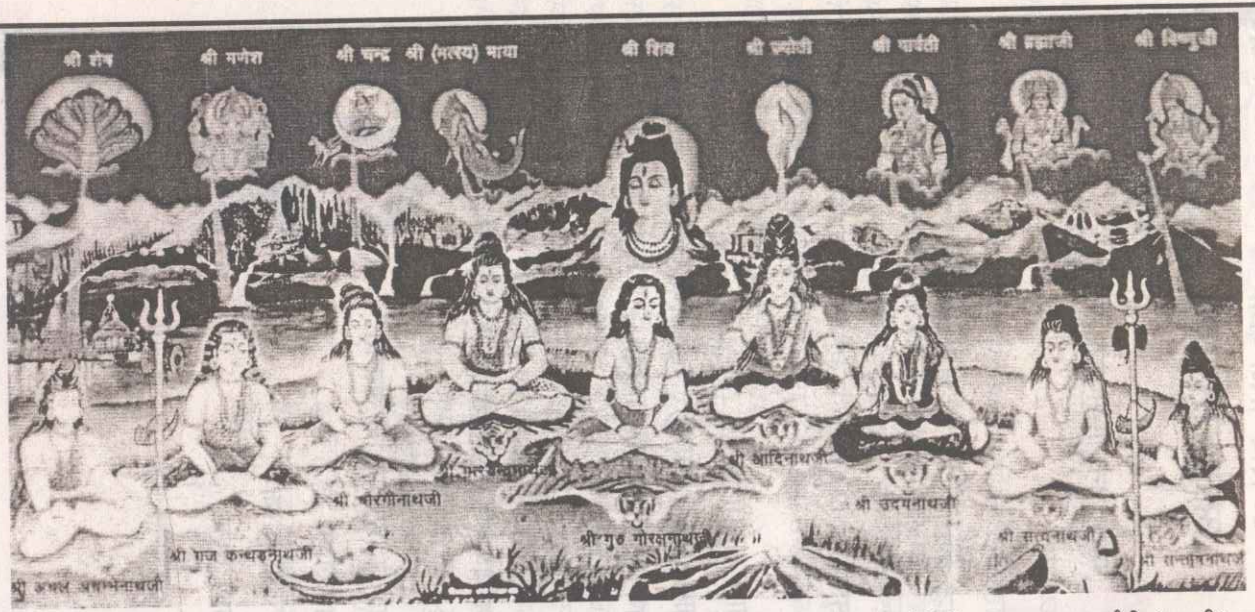

सत नमो आदेश। गुरू जी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐकार आदिनाथ (ॐका) ज्योति स्वरूप बोलिये। उदयनाथ पार्वती (धरती) स्वरूप बोलिये। सत्यनाथ ब्रह्माजी (जल) स्वरूप बोलिये। सन्तोषनाथ विष्णुजी (खड्ग खाण्ड तेज) स्वरूप बोलिये। अचल-अचम्भेनाथ शेष (वायु) स्वरूप बोलिये। गजबेलि गज कंथड़नाथ गणेश जी (गजहस्ती) स्वरूप बोलिये। ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ चन्द्रमा (अठारह भार वनस्पति) स्वरूप बोलिये। माया स्वरूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ मत्स्य (माया) स्वरूप बोलिये। घटे पिण्डे नव निरन्तरे रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ शिव (बाल) स्वरूप बोलिये।

श्री नाथ सिद्ध कवचम्

(गोरक्ष-रहस्यम् एवं सूक्तम)

१- नित्य-विधि

(गणेश वन्दना-सद्गुरू स्मरण)

विधि: सर्वप्रथम आप किसी एकान्त स्थान में या घर के एकान्त पूजा स्थल में श्री गुरू गोरक्षनाथ जी की या नवनाथों की मूर्ति या तस्वीर या श्री नाथ सिद्ध यन्त्र या नाथों की चरणपादुका या श्री नाथजी के नाम कलश की स्थापना करें।

प्रात:काल पवित्र होकर अपने पूजा स्थान में आसन, पूजन, जप इत्यादि सभी सामग्री लेकर रखिये। प्रथम अपने इष्ट गुरू गोरक्षनाथ जी के सन्मुख उत्तराभिमुख (उत्तर दिशा की ओर मुख करके) आसन लगाइए। आसन-कुशासन या कम्बलासन या व्याघ्र अथवा मृगासन हो। अब आप इष्ट के सन्मुख आसन के ऊपर पद्मासन या सिद्धासन या सरलासन में विराजिये।

प्रथम श्री गणेश जी को मान देकर "**श्री गणेशाय नम:**"

का उच्चारण कीजिये या निम्न "**श्री गणेश वन्दना**" कीजिये

"श्री गणेश-वन्दना"

गजाननमहं वन्दे, गजकन्थड़रूपिणम्।
विघ्नहरणं सदा नौमि त्रिऋद्धि-सिद्धि प्रदायकम्।।१।।
नमस्ते सृष्टिरूपाय, नाथरूपाय ते नम:।
भक्तप्रियाय देवाय, नमस्तुभ्यं विनायक।।२।।

तत्पश्चात् श्री गणपति जी को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार कीजियेगा। शान्त-चित्त भाव से आप अपने इष्ट अर्थात् श्री गुरू गोरक्षनाथजी को जल- गंध-अक्षत पुष्प, विल्वपत्र, भस्मी, वस्त्र इत्यादि से यथा सम्भव पूजन कीजिये और नमस्कार कीजिये।

ध्यान क्रिया विधि-प्रथम आपको इक्कीस प्राणायाम विशेषत: पद्मासन लगाकर करना चाहिये विशेषत: नाथ योगी, साधु-सन्तों को भी प्राणायाम करना चाहिये जिससे मन-चित्त शुद्ध हो जाये। गृहस्थ को भी यह क्रिया करनी चाहिये। अगर उपरोक्त प्राणायाम नहीं कर सकें तो साधक को अपनी आंखे बन्द करके ५ या १० मिनट अपनी नासिका द्वारा जो श्वास (प्राण-अपान) चलती रहती है उस क्रिया पर ध्यान देना चाहिये।

जब नासिका द्वारा श्वास (प्राण) अन्दर प्रवेश करती है तो उसे काया के अन्दर थोड़ा या हल्का सा रोकिये और फिर उस श्वास को बाहर छोड़िये। इस प्रकार यह क्रिया बार-बार कीजिये और उस अन्दर बाहर आते-जाते श्वास के ऊपर अपना लक्ष्य (ध्यान) केन्द्रित कीजिये। कुछ समय पश्चात् आपको ध्वनि सुनाई देगी। यह क्रिया अत्यंत सरल एवं आसान है। आपको केवल श्रोता (द्रष्टा) बनकर उस श्वास को सुनना है। आगे आप गहराई में प्रगतिपथ तक जायेंगे तो ॐ हम-सों हम की ध्वनि सुनाई देगी, ठीक इसी समय आपका मन-बुद्धि चित्त सांसारिक विचारों (बाधाओं) से हटकर स्वच्छ शुद्ध एवं निर्लेप हो जायेगा और आप ध्यांन अच्छे तरीके से कर सकेंगे।

सूचना: आप यह क्रिया कभी भी कर सकते हैं विशेषत: अस्वस्थ मन हो या विभिन्न विचारों से भ्रमित चित्त हो, मनस्ताप हो, घृणा या क्रोध-संकल्प विकल्प इत्यादि से निवृत्त होने के लिए यह क्रिया अवश्य करनी चाहिये। आपका मन-चित्त-बुद्धि शुद्ध हो जायेंगे।

सद्गुरू स्मरण

इस प्रकार प्राण-अपान क्रिया के पश्चात् आपको अपने सद्गुरूजी को स्मरण करना चाहिये या श्रद्धा से उनका नाम लेकर नमस्कार करना चाहिये या उनकी तस्वीर को नमस्कार करें अथवा गुरू मन्त्र का स्मरण (जप) कीजिये या १०८ बार गुरूमंत्र का जप कीजिये। अगर आपको

सद्गुरूजी की प्राप्ति नहीं है तो श्री गुरू गोरक्षनाथ जी को साक्षी मान कर विधि विधान करना चाहिये!

विशेषः सद्गुरूजी की प्राप्ति अवश्य करनी चाहिये।

ध्यान विधिः अतः श्री शम्भुजति श्री गोरक्षनाथ जी का निम्न दिये हुए **"श्री गोरक्ष ध्यानम्"** का पाठ करें। यह **"श्री गोरक्ष ध्यानम्"** कंठस्थ करना चाहिये।

"श्री गोरक्ष ध्यानम्" को प्रारम्भ करते समय आप अपने दोनों हाथों की अन्जलि बनाकर उसमें पुष्प (विशेषतः लाल) रखिये और अपनी दोनों आंखों को एकाग्र करके अपने इष्ट अर्थात् श्री गुरू गोरक्षनाथ जी की मूर्ति के या उनकी तस्वीर के मुख मण्डल पर या चरण पादुका पर या सिद्ध यन्त्र के बीचों बीच केन्द्र बिन्दु पर या कलश हो तो कलश को देखते हुए **"श्री गोरक्ष ध्यानम्"** का पाठ करें।

यहां आंखें बन्द करके श्री गोरक्षनाथ जी के स्वरूप का स्मरण **"श्रो गोरक्ष ध्यानम्"** का पाठ करते-करते भी कर सकते हैं।

विशेषः

१. **"श्री गोरक्ष ध्यानम्"** आप संस्कृत या हिन्दी में दिये हुए अर्थ को भी याद करके कर सकते हैं।

२. **ध्यान पाठ**-वाचिक (ऊंची आवाज में) या उपांशु (होंठ हिलाते हुए) विधि से करोगे तो अन्जलि में लाल पुष्प लेकर इष्ट पर एकाग्र नजर देखकर ध्यान पाठ करें।

३. **ध्यान पाठ**-मानस (मन के अन्दर ही मंत्र जाप) विधि से करनी हो तो आंख बन्द करके इष्ट के स्वरूप का स्मरण करें।

"ॐ शिव गोरक्ष योगिने नमः"

२- "श्री गोरक्ष ध्यानम्"

**अलखक्षेत्र शैले च वायुलोके योगारूढ़ाः।
ॐकार ज्योति रूपाय आदिनाथं च रूपिणम्।।१।।
यथोक्त रूपिणं शम्भुं निर्गुणं गुणरूपिणम्।
भक्तवत्सलमानन्द शिव-गोरक्षं नमाम्यहम।।२।।
दिव्य मुख महातेज त्रिनेत्र कर्णकुण्डलम।
कर्पूरगौरं दिव्याङ्गं चन्द्रमौलिं कपर्दिनम्।।३।।
व्याघ्रचर्मासनम् च मृगचर्माम्बरं शुभम्।
शैली शृंगी च रूद्रमाल पद्मासन सुशोभितम्।।४।।
शून्यरूपो शून्यमयो शून्ययोगे शून्यस्थितः।
सनातनंच अनन्त रूपा गोरक्ष त्रिलोक वन्दितः।।५।।
महायोगी महासिद्धः महाज्ञानी महागुणः।
महाबली महामाया महाभुजा महारथः ।।६।।
सिद्धयौऽष्टौ च यस्याग्रे नृत्यन्तीह निरन्तरम्।
जयजयेमा शब्दैश्च सेवितं भक्तपुञ्जके।।७।।
तेजसा दुस्सहेनैव दुर्लक्ष्यं देवसेवितम्।।८।।
वेदैः शास्त्रैर्यथागीतं त्रिदेवानुत च सदा।
भक्तवत्सलमानन्दं शिव गोरक्षं नमाम्यहम्।।९।।**

"श्री गोरक्षनाथजी के ध्यान"

भावार्थ- हे शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथजी आप अलख क्षेत्र नाम के शैल (पर्वत) (अर्थात कैलाश पर्वत) पर जहां वायुलोक में योग पर आरूढ़ होकर निवास करते हो। आप ॐकार ज्योति स्वरूप एवं प्रत्यक्ष आदिनाथ जी के स्वरूप हो। ।। १।। जिनके स्वरूप का शास्त्रों में यथावत वर्णन किया है, जो निर्गुण होते हुए भी गुणस्वरूप है, उस भक्तवत्सल श्री शम्भुजती, शिव स्वरूपी गुरू गोरक्षनाथ जी को नमस्कार करता हूँ।। २।।

महातेजस्वी कुण्डल कानों में धारण किये हैं। आपकी कान्ति कर्पूर के समान गौर है जो दिव्य रूपधारी चंद्रमा रूपी मुकुट से सुशोभित हैं और शीश पर जटाजूट धारण करने वाले हो।। ३।। आप व्याघ्र के चर्म पर आसन लगाये हुए हो तथा मृगचर्म को परिधन किये हुए हो जिनका स्वरूप अत्यंत शुभ है जो सेली सृंगी तथा रूद्राक्ष माला को पहने हुए पद्मासन लगाये हुए अतिशय शोभायमान दिख रहे हा ।। ४।।हे जती गोरक्षनाथ जी आप शून्य रूप वाले (निराकार) हो, आप शून्य में विलय ऐसे शून्यमय हो आपका योग शून्य में जाते हैं जो कि आप शून्य में स्थित हो तथा आप फिर भी सनातन अर्थात आदि परम्परा से अनन्त रूप धारण करते हो। हे गुरू गोरक्षनाथ जी आपको तीनों लोक वन्दन करते हैं।। ५।। आप महायोगी महासिद्ध हो तथा आप महाज्ञानी और महागुणी हो, गुणवान हो एवं आप महाबलवान, महाबली, महामायावी, महान बांहों वाले हो और महारथी हो! आपकी जय हो।। ६।। जिनके आगे आठों सिद्धियाँ निरंतर नृत्य करती रहती हैं, भक्त समुदाय जय जयकार करते हुए जिनकी सेवा में लगे रहते हैं ।। ७।। दुस्स:ह तेज होने के कारण जिनकी ओर देखना भी कठिन है जो देवताओं से सेवित हैं। तथा सम्पूर्ण प्राणियों को शरण देने वाले हैं। जिनका मुखारविन्द प्रसन्नता से खिला हुआ रहता है।। ८।। वेद और शास्त्रों ने जिनकी महिमा का यथावत गान किया है ! तीनों देवता भी सदासर्वदा जिनकी स्तुति करते रहते हैं, तथा जो परमानन्द स्वरूप है। उस भक्तवत्सल श्री शम्भुजती शिव स्वरूपी गुरू गोरक्षनाथ जी को नमस्कार करता हूं।। ९।।

.....आदेश! आदेश!!

आदेश!!!

उपरोक्त विधि से- इस प्रकार अपने इष्ट श्री गुरू गोरक्षनाथ जी का"**श्री गोरक्ष ध्यानम्**" पाठ होने के उपरांत आप अपने हस्त-अंजलि के

पुष्प को श्री गुरू गोरक्षनाथ जी के चरण कमल ऊपर या चरण पादुका ऊपर या श्री नाथ सिद्ध यन्त्र के ऊपर या कलश के ऊपर छोड़ दें। अतः श्री गुरू गोरक्षनाथ जी को नमस्कार करें। [नाथ योगी होंगे तो नादि आदेश कर सकते हैं।]

"श्री गोरक्ष ध्यानम्" के पश्चात् आपको **"श्री गोरक्ष रहस्यम्"** का पाठ करना चाहिये।

सूचनाः संस्कृत भाषा में या केवल हिन्दी अनुवाद का भी पाठ सकते हैं।

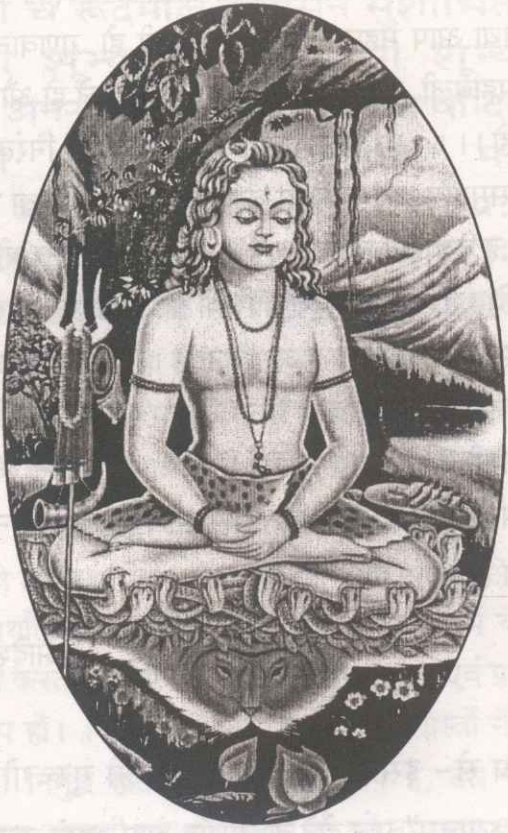

३- "श्री गोरक्ष रहस्यम्"

"ॐ शिव गोरक्ष योगी"

सती पार्वत्युवाच-

भगवन्! देवदेवेश रहस्यं गोरक्षस्य मे।
ब्रूहि येन भक्तिं कुर्यात् साधको गोरक्ष-शिवम्।।१।।

श्री शिव उवाच-

शृणु देवि परं गोप्यं कथयामि सुशोभने।
रहस्यं सिद्धिदं साक्षाद् गोरक्षस्य महात्मनः।।२।।

"श्री गोरक्षनाथजी का रहस्य"

भावार्थ- सती पार्वती ने कहा-
हे देवदेवेश भगवान मुझे गुरू गोरक्षनाथ जी का रहस्य बतलाइये, जिससे गुरू गोरक्षनाथ जी की भक्ति कर सके।। १।।
श्री भगवान शिव ने कहा-
हे सुन्दरी देवी सुनो! मैं परम गोपनीय तथा साक्षात् सिद्धि देने वाला गुरू गोरक्षनाथ जी का रहस्य कहता हूँ।। २।।

गुरू गोरक्षनाथस्य साधने ये निरूपिताः।
उपाया निष्फलाः सर्वे विना ध्यानेन सर्वथा ।।३।।
यो ध्यानं साधनं हित्वा उपायं चान्यमाश्रयेत्।
न सः सिद्धिमवाप्नोति नरो वर्षशतैरपि।।४।।

भावार्थ- श्री गुरू गोरक्षनाथ जी के साधन में जो सभी उपाय बतलाये गये हैं वे बिना ध्यान (योग) साधना के निष्फल हैं।। ३।। जो मनुष्य ध्यान योग (या जप) साधना को छोड़कर अन्य उपायों का आश्रय लेता है, वह सैकड़ों वर्ष में भी सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकता।। ४।।

स्वयं ज्योतिःस्वरूपोऽयं शून्याकारो निरंञ्जनः।
दशदिक्षु सदा व्याप्तः गोरक्षः प्रथितः प्रभुः।।५।।
अहमेवास्मि गोरक्षो मद्रूपं तन्निबोऽधत।
योगमार्ग प्रचारार्थं मया रूपमिदं घृतम्।।६।।

भावार्थ– शून्य में आश्रय रखने वाले निराकार और निरन्जन भगवान गुरू गोरक्षनाथ जी स्वयं ज्योति स्वरूप अर्थात् अनादि हैं, वह सभी दस दिशाओ में जती गोरक्ष के नाम से प्रसिद्ध हैं।। ५।। मैं ही गोरक्षनाथ हूँ! गोरक्षनाथ जी को मेरा ही रूप समझो। योगमार्ग का प्रचार करने के लिए मैनें ही यह रूप धारण किया है।। ६।।

यस्य शून्यमयी माता यस्य चाविगतः पिता।
निरञ्जनो महायोगी गोरक्षः सर्वदा गुरूः ।।७।।
रूद्राक्षमालाधरः शान्तः कुण्डल प्रभयान्वित्।।
भुजङ्ग मेखलादिव्य जती गोरक्ष शोभनः।।८।।

भावार्थ– शून्य उनकी माता है, अविगत अर्थात व्यवहार उनका पिता है। उनसे स्वयं आविर्भूत ब्रह्माण्ड सत्गुरू गोरक्षनाथ जी महायोगी और निराकार है ।।७।। रूद्राक्ष माला धारण करने वाले कुण्डलों की कान्ति से देदीप्यमान सर्प के मेखला से विभूषित ऐसे दिव्य स्वरूप शिव जती गुरू गोरक्षनाथ जी अति शोभायमान हैं।। ८।।

गजासुर-विमर्दी च भूत-बेताल-शोभितः।
श्मशानारण्यवासी कर्परालङ्कृतः शिवः।।९।।
ज्ञानवन्तः दयावन्तः मम प्रियस्वरूपजः।
ऊत्पत्ति-स्थिति-संहाराय गोरक्षाय नमो ऽऽदेशम्।।१०।।

भावार्थ– गजासुर का नाश करने वाले भूत बेताल से शोभित श्मशान में रहने वाले जंगलों में विचरण करने वाले खप्पर धारण करने वाले

ज्ञानवान् दयालु मेरे ही प्रिय स्वरूप तथा उत्पत्ति, स्थिति एवं संहार रूप श्री जती गोरक्षनाथ जी को मैं सआदेश नमस्कार करता हूँ, प्रणाम करता हूँ।।९-१०।।

यतीन्द्रं योगीन्द्रं सकलवसुधाया हितकरं।
सदा सेव्यं भव्यं कलिमल-दहं साधु सुखदम्।।
परंपारं ज्योतिर्जं निमृतहरं कारणं परम्।
भजेत् तत्रूपं श्रुति कीर्तितं नतपदं गोरखप्रियम्।।११।।

भावार्थ- जो यतियों के प्रिय योगियों के इन्द्र समस्त वसुधा के (पृथ्वी के) हितकारी, सदा भव्य लोगों के सेव्य कलिमल को भस्म करने वाले साधु (सन्तों) को सुख देने वाले समस्त संसार के कारण जन्म मृत्यु के हरण करने वाले, परम ज्योति स्वरूप और श्रुतियाँ जिनकी महिमा का गान करती हैं, उस मेरे अतिप्रिय स्वरूप गुरू गोरक्षनाथ जी का हम भजन करते हैं।।११।।

सुरेशं योगीशं निखिलजनत्रयतापहरं।
दयालुं गोपालं निजजनसदा पालने तत्परम्।।
स्वभक्तेभ्यो योगं वितरति सदाकष्टहरणाय।
भजें तं तत्रूपं श्रुति कथितंनतपदं गोरखप्रियम्।।१२।।

भावार्थ- जो देवताओं के ईश्वर हैं। योगीओं के ईश्वर निखिल लोकों के अध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक तीनों तापों का हरण करने वाले, दयालु गायों का पालन करने वाले, अपने अनन्य भक्तों का सदैव परिपालन करने वाले, समस्त कष्टों का हरण करने के लिए स्वभक्ति का योग विधि के देने वाले हैं। उन श्रुति प्रतिपाद्य मेरे अतिप्रिय स्वरूप परम गुरू गोरक्षनाथ जी का हम भजन करते हैं।। १२।।

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च मरीच्याद्या महर्षयः।
गोरक्षं प्रणमन्ति तं सदा सम्पन्त मानसम् ।।१३।।

महायोगी कृपासिन्धु नानाभरणैः भूषितम्।
धर्मार्थ काममोक्षणां दातारं तं नमाम्यहम् ।।१४।।

भावार्थ– ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र और मरीचि आदि महर्षि जिस सम्पन्न मनवाले अर्थात उदार चित्त गोरक्षनाथ जी को सदा (सर्वदा) प्रणाम करते हैं। उस महायोगी कृपासिन्धु अनेक आभरणो से (अर्थात शैली सिंगी, शीश जटा, नाद मुद्रा, रूद्राक्ष इत्यादि से) विभूषित तथा धर्म अर्थ काम एवं मोक्ष के दाता श्री गुरू गोरक्षनाथ जी को मैं प्रणाम करता हूँ।। १३-१४।।

शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि गोरक्ष मंत्रमुत्तमम्।
येन मंत्र प्रभावेन जतीजाप शुभोभवेत् ।।१५।।
अनेन मंत्रजापेन गोरक्ष दर्शनं लभेत्।
अतिगुह्यतरं देवी देवानामपि दुर्लभम् ।।१६।।

भावार्थ– अतः सुनो देवी मैं उत्तम श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी के मन्त्र का उपदेश करूंगा इस मंत्र के प्रभाव से जती गोरक्षनाथ जी का जाप सफल होगा ।। १५।। इस मन्त्र के जाप करने से प्रत्यक्ष गुरू गोरक्षनाथ जी के दर्शनों का लाभ होता है। (यह रहस्य) अति गुह्य और देवी देवताओं के लिए भी दुर्लभ है।। १६।।

गोपनीय प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वती ।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।।१७।।
पाठमात्रेण संसिद्धयेत् गोरक्ष स्तोत्रमुत्तमम्।।१८।।

भावार्थ– हे देवी पार्वती इसे स्वंयोनि के भाँति प्रयत्न पूर्वक गुप्त रखना चाहिये यह उत्तम जती गोरक्ष रहस्य केवल पाठ (पठन) के द्वारा मारन (काम क्रोधादि का नाश) मोहन (इष्ट देवता का मोहन) वशीकरण (मन को

वशीभूत करना) स्तम्भन (इन्द्रियों को विषयों के प्रति उपरति) और उच्चाटन (मोक्ष प्राप्ति के लिए छटपटाहट) आदि (आभिचारिक) उद्देश्य को सिद्ध करता है ।। १७-१८ ।।

अथ मंत्र (गायत्री)

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथाय विद्महे शून्य पुत्राय धीमहि । तन्नो गोरक्ष निरन्जनः प्रचोदयात्।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं गों हुं फट् स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष हुं फट् स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष निरञ्जनात्मने हुं फट् स्वाहा।

या

"शिव गोरक्ष योगी"

टिप्पणी- (उपरोक्त मन्त्रों में आये बीजों का अर्थ जानना न सम्भव है न आवश्यक और न वाच्छनीय है, यह तो केवल जप (मनन) मात्र करना ही पर्याप्त है।)

एवं ध्यात्वा जपित्वा च साधकाः शुद्ध-मानसाः ।
साधयेत् सर्व कार्याणि नात्र कार्याविचारणा।।१९।।
यो धारयेन्नरो नित्यं मन्त्रराजं विशेषतः ।
सो योगसिद्धिमाप्नोति गोरक्षस्य प्रसादतः।।२०।।

भावार्थ- इस प्रकार ध्यान करके जप करने से शुद्ध हृदय वाले साधक अपने मनोवांछित फल को प्राप्त करते हैं। इसमें तनिक भी संशय नहीं है ।। १९।। जो मनुष्य इस मन्त्र राज को विशेष करके धारण करते हैं (सतगुरूमुखारविन्द से) वे श्री गुरू गोरक्षनाथ जी महाराज की कृपा से योग सिद्धि को प्राप्त करते हैं।। २०।।

नमस्ते रूद्र रूपाय सादेशं शत्रुमर्दिनं।
नमः जती महायोगी सादेशं आत्मदर्शनम्।।२१।।
नमस्ते विघ्नहर्ताय काम क्रोधादि नाशिने।
जाग्रतं हि महायोगी जप-सिद्धिं कुरूष्व मे।। २२।।

भावार्थ– हे रूद्र रूपी गुरू गोरक्षनाथ जी आपको नमस्कार है। शुत्र का मर्दन करने वाले जती गोरक्षनाथ जी आपको सआदेश नमस्कार है। हे महाजती महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी आपको नमो आदेश है। हे आत्मदर्शनी गुरू गोरक्षनाथ जी आपको मेरा आदेश है। नमस्कार है।। २१।। हे संकटों की हत्या (नाश) करने वाले और काम-क्रोध-मोह मद-मत्सर इत्यादि का नाश करने वाले सद्गुरू गोरक्षनाथ जी आपको मैं नमस्कार करता हूँ । हे महायोगी आप मेरे जप को जाग्रत और सिद्ध करो ।। २२।।

ॐकार सृष्टिरूपाय ह्रींकार प्रतिपालने।
श्रींकार वरदायकाय गोंकार योग रूपिणे।।२३।।
गोरक्ष गोरक्षाय बीज रूपं नमोस्तुते।
विद्महे चाभयदाय नित्यादेश मंत्र-रूपिणे।।२४।।

भावार्थ–(हे गोरक्षनाथ जी) आप ॐकार रूप में सृष्टिरूप हो, ह्रीं कार के रूप में सृष्टि का पालन करने वाले हो, एवं श्रीं कार रूप में आप वरदान देने वाले हो, गों कार रूप में योगरूपी (अर्थात सर्व इन्द्रिय संयमी) हो ।। २३।। गोरक्ष नाम से आप गौ की पृथ्वी, जल सूर्य बैल यज्ञ, सुरभि स्वर्ग दिशा किरण नेम बाणी बान एवं पशु इत्यादि के धारण कर्ता, विलय कर्ता तथा रक्षा करने वाले हो तथा निखिल ब्रह्माण्ड का आप बीज रूप हो, आपको नमस्कार है। विद्महे रूप में आप नित्य ही अभय देते हो जो कि आप इस (गोरक्ष गायत्री) मंत्र का स्वरूप हो।। २४।।

शुं श-शान्ति-रूपाय शून्य-पुत्राय आदेशं ।
धीमहि तु ज्ञान रूपाय तन्नो रूपाय नाथस्य।।२५।।
निरञ्जनो, निराकार गोरक्ष निरञ्जनात्मने।
हुं हुं हुंकार रूपाय जं जं जती गोरक्षस्य।।२६।।

भावार्थ- शुं श रूप में आप शान्ति देने वाले तथा जिनकी माता शून्य है ऐसे गुरू गोरक्षनाथ जी आपको मैं आदेश करता हूँ । धीमहि रूप में आप ज्ञानी रूप धारण करने वाले हो एवं तन्नो रूप में आप नाथ स्वरूप हो।। २५ ।। हुं हुं में आप हुंकार रूप हो जं जं से आप जती रूप गोरक्ष हो जो कि आप निरन्जन निराकार एवं निरन्जन आत्म स्वरूप हो।। २६ ।।

भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवनाथाय मोक्ष-मुक्तिदायकम्।
धां धीं धूं धर्म नाथाय महानाथो नमो नमः।।२७।।
सां सीं सूं सर्वांगनाथाय महासिद्धं नमो ऽऽदेशम्।
कां कीं, कूं कलेश्वराय महाकाल कालरूपाय।।२८।।

भावार्थ- हे गुरू गोरक्षनाथ जी आप भ्रां भ्रीं भ्रूं के रूप में भैरवनाथ हैं,धां धीं धूं के रूप में धर्मनाथ जी हैं, हे महानाथ जी आप मोक्ष मुक्ति देने वाले हो, आपको बारंबार नमस्कार करता हूँ ।। २७।। सां सीं सूं रूप में आप सर्वांगनाथ जी हो तथा कां कीं कूं रूप में आप कलेश्वर तथा काल रूप में महाकाल हो, महासिद्ध गुरू गोरक्षनाथ जी आपको नमन पूर्वक आदेश करता हूँ।। २८।।

लां लीं लूं च लाल ग्वालाय महायोगी योग लिलाय।
वां वीं वूं विघ्ननाशाय विमलनाथो नमो नमः।।२९।।
गों गीं गूं गुरू गोरक्षाय सर्वत्र रोग नाशाय।
जूं सः मृत्युञ्जयाय च महाकाल नमो नमः।।३०।।

भावार्थ– हे शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी आप लां लीं लूं के रूप में लालग्वालनाथ जी हैं तथा महायोगी रूप में योग लीलाऐं करने वाले हो तथा वां वीं वूं के रूप में आप संकटों का नाश करने वाले विमलनाथजी आपको मैं बारंबार नमस्कार करता हूँ।। २९ ।। आप गों गीं गूं के रूप में प्रत्यक्ष गुरू गोरक्षनाथ जी जो कि सर्वत्र रोग व्याधियों का नाश करने वालें । तथा जूं सः के रूप में मृत्युंजय अर्थात् मृत्यु के ऊपर विजय प्राप्त करने वाले कालों के महाकाल आपको मैं बारंबार पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ ।। ३०।।

खड्दर्शन गोरक्षाय खां खीं खूं खेचरी तथा।
रां रीं रूं रहस्य नाथ मंत्र सिद्धि कुरूष्व मे।।३१।।
इदं गोरक्ष रहस्य मंत्र जागरति हे तवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वती।।३२।।

भावार्थ– हे शिव स्वरूप गुरू गोरक्षनाथ जी आप खां खीं खूं के रूप में खेचरी (आकाश गामी) या खेचरी मुद्रा धारण करने वाले हो तथा आप खडदर्शणी अर्थात् (कुण्डलीनी योग द्वारा छ चक्रों के दर्शन करने वाले हो) अतः रां रीं रूं के स्वरूप में नाथ (श्री गोरक्ष) रहस्य के मन्त्र को मेरे लिए सिद्ध करो।। ३१ ।। इस प्रकार गोरक्ष रहस्य के मन्त्र को जगाने के लिए है। इसे भक्ति-हीन पुरूष को नहीं देना चाहिए, हे पार्वती इसे गुप्त रखो।। ३२।।

पाठ मात्रेण मन्त्राणामुच्यते सर्व किल्विषैः।।३३।।
रहस्यं ध्यानमुत्तमम् गुह्याद् गुह्यतरं महत्।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन सर्वकाम-फल-प्रदम्।।३४।।

भावार्थ– इस गोरक्ष रहस्य के मन्त्र के पाठ मात्र से मनुष्य सात जन्मों में उपार्जित ब्रह्म हत्या सदृश घोर पातको एवं समस्त कल्मषों से मुक्त हो जाता है।। ३३।। इसलिए मैंने पूर्ण प्रयत्न करके श्री गोरक्ष रहस्य के गोपनीय से भी अत्यंत गोपनीय ध्यान का वर्णन किया है, जो सब प्रकार के मनोवांछित फलों को देने वाला है।। ३४।।

नाथरहस्य प्रसादेन त्वं सर्वमान्यो भविष्यसि।
सर्व रूपमयो नाथः सर्व नाथमयं जगत्।।३५।।
विश्वरूपं परमयोगी अतोऽहं आदेशं कुरू।।३६।।

"इति शिव पार्वती संवादे " श्री गोरक्ष रहस्य" सम्पूर्णः"

भावार्थ– उनके अर्थात श्री गोरक्ष रहस्य के प्रसाद से तुम सर्व मान्य हो जाओगे श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी सर्वतः रूपमय है तथा सम्पूर्ण जगत श्री गुरू गोरक्षनाथमय है।। ३५।। अतः मैं भी उन विश्वरूपा परम योगी (गुरू गोरक्षनाथजी को) आदेश (नमस्कार) करता हूँ।। ३६।।

इस प्रकार शिव पार्वती संवाद में "श्री गोरक्ष रहस्यम्" सम्पूर्ण हुआ।

उपरोक्त विधि– इस प्रकार **"श्री गोरक्ष रहस्यम्"** का सम्पूर्ण पाठ होने के पश्चात आपको अपने इष्ट अर्थात श्री गुरू गोरक्षनाथ जी के निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का जप करना चाहिये।

"श्री गुरू गोरक्षनाथजी के मन्त्र"

१. शाबरी मंत्र– **"ॐ शिव गोरक्ष योगी"**

२. वैदिक मंत्र– (कल्पद्रुमतन्त्र से)

"गोरक्ष गायत्री"

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथाय विद्महे शून्य-पुत्राय धीमहि तन्नो गोरक्ष निरञ्जन प्रचोदयात्।

या

"ॐ ह्रीं श्रीं गों हुं फट् स्वाहा।"

या

"ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष हुं फट् स्वाहा ।"

या

"ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष निराञ्जनात्मने हुं फट् स्वाहा।"

या

"ॐ शिव गोरक्षाय नमः"

उपरोक्त मन्त्र जाप १०८ बार करना चाहिये आगे समय उपलब्धी करके सवा एक घण्टा (७५ मिनीट) तक मंत्र जाप करना चाहिये।

४- "श्री नाथ सिद्ध कवचम्" पाठ के विधि-विधान

मन्त्र जाप के उपरान्त आपको **"श्री नाथ सिद्ध कवचम"** का पाठ निम्न विधि से करना चाहिये।

आपको **"श्री नाथ सिद्ध कवचम्"** का पाठ करते समय प्रत्येक श्लोक समाप्ति के बाद एक पुष्प इष्ट, (गुरू गोरक्षनाथजी) के ऊपर चढ़ाना चाहिये।

१. **"श्री नाथ सिद्ध कवचम्"** का पाठ आप निःस्वार्थ तथा नाथ भक्ति व श्रद्धा भाव से करना चाहते हो तो प्रति श्लोक समाप्ति उपरान्त मनः पूर्वक नमस्कार करना चाहिये।

२. यदि विद्या प्राप्ति चाहते हो तो प्रति श्लोक उपरान्त सफेद कमल पुष्प चढ़ाना चाहिये।

उसी प्रकार-

३. ज्ञान प्राप्ति के लिए पारिजातक पुष्प चढ़ाइये।

४. धन प्राप्ति के लिए शमी के सफेद पुष्प या अक्षद् (चावल) चढ़ाना चाहिये।

५. योग साधना सिद्धि के लिए कमल के लाल पुष्प चढ़ाना चाहिये।

६. पुष्टी कर्म प्राप्ति के लिए चमेली के पुष्प प्रति श्लोक उपरान्त चढ़ाना चाहिये।

७. समृद्धि प्राप्ति के लिए बिल्वपत्र या बिल्व फल चढ़ाने चाहिये।

८. आकर्षण प्राप्ति के लिए छूईमूई (लाजवन्ती) के पुष्प या बिल्व पत्र चढ़ाना चाहिये।

९. मोहन विद्या के लिए धतुरा के पुष्प चढ़ाना चाहिये।

विशेष: विधि के उपरान्त यह सभी पुष्प-पत्र फल इत्यादि बहते हुए जल म प्रवाहित करना चाहिये।

कुछ विशेष विधियाँ-

१. **आपको गुरू गोरक्षनाथजी के या नवनाथ जी के (प्रचिती) भक्ति प्राप्ति** के लिए आप यहाँ प्रति श्लोक समाप्ति पर वटवृक्ष के पत्तों पर (चिकनाई पृष्ट भाग पर) वटवृक्ष के कलम से अष्टगंध से **"गों"** यह बीजाक्षर लिखकर पत्ते चढ़ावे। आपको नाथजी की प्रचिति अवश्य आयेगी। अन्त में यह पत्ते बहते जल में एक एक करके प्रवाहित करें।

यह विधि: विशेषत: **गुरू पूर्णिमा** या महीने की हर **पूर्णिमा** -गुरूवार, सोमवार या शनिवार को करनी चाहिये।

२. **आपको विद्या- ज्ञान प्राप्ति के लिए** पीपल के पत्तों के ऊपर (चिकनाई वाले पृष्ट भग पर) पीपल के ही डंठल की कलम से एवं अष्टगंध से **"गं गं"** यह बीजाक्षर लिखें और वह पत्ते एक-एक श्लोक समाप्ति के बाद इष्ट ऊपर चढ़ायें अन्त में बहते जल में एक-एक करके प्रवाहित करें।

यह विधि- हर महीने की गणेश चतुर्दशी तथा गणेशोत्सव के १० दिनो में, विशेष रूप से करना चाहिये सप्ताह में हर मंगलवार को भी कर सकते हैं।

लाभः स्मरण शक्ति, स्फूर्ति, विद्या एवं ज्ञान का लाभ होगा।

३. **आपको धन (लक्ष्मी) प्राप्ति के लिए** पीपल वृक्ष के पत्तों (चिकनाई पृष्ट भाग पर) के ऊपर पीपल के कलम से **"क्लीं"** यह बीजाक्षर अष्टगंध से लिखकर प्रति श्लोक उपरान्त चढ़ाईये अन्त में बहते जल में एक-एक करके प्रवाहित करिये। यह विधि गुरूवार या महीने की पूर्णिमा को करें। विशेष रूप से होली, दीपावली एवं दशहरा को करना चाहिये।

४. **आपको सन्तान प्राप्ति के लिए** पांच धान्य (अनाज) का या सात प्रकार के धान्य (अनाज) का आटा लेकर जल व सरसों या तिलि के तेल में आटा गूंथकर उसकी छोटी सुपारी के आकार की (पीण्ड) पिंडियाँ बनावें और पाठ करते समय प्रत्येक श्लोक समाप्ति के उपरान्त एक-एक पिंड चढ़ाऐं। अन्त में वह प्रत्येक पिंड जल में मछलियों को खिलावें और एक दीपक गौ घी का जल में प्रवाहित करें। यह विधि नर, नारि दोनों भी कर सकते हैं।

विधिः दीपावली की अमावस्या, गुरू पूर्णिमा, गणेश चतुर्दशी, होली तथा सोमवार, गुरु पुष्प, सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, सिद्धि रवि पुष्प इत्यादि योग को कर सकते हैं।

सूचनाः

१. उपरोक्त विधियों की तैयारी अर्थात् पुष्प, पत्र, फल, पीपल, वटवृक्ष पत्ते, पिंड इत्यादि साहित्य पाठ आरम्भ करने से पहले ही तैयारी कर लेना चाहिये।

२. उपरोक्त विधियाँ आपके अनुष्ठान अनुसार प्रतिदिन करनी चाहिये।

****

५- श्री नाथ सिद्ध कवचम्

"ॐ जती गोरक्षाय नमः"

पार्वत्युवाच-

यद् गह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यत्नं कस्यचिदाख्यातं तन्मेब्रूहि महाप्रभुः।।१।।

शिव उवाच-

अस्ति गुह्यतमं देवि सर्वभूतोपकारकम्।
नाथस्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महासति।।२।।
प्रथम आदिनाथं च द्वितीय उदयस्तथा।
तृतीय सत्यनाथेति सन्तोषस्तु चतुर्थकम् ।।३।।
पंचमं कन्थडनाथेति षष्ठ अचल अचम्भयः।
सप्तमं चौरंगीनाथ मत्स्येन्देति तथाष्टमम्।।४।।
नवमं जती गोरक्ष नवनाथ प्रकीर्तितः।
उक्तान्येतानि नामानि आदिनाथस्य महाप्रभु।।५।।

'श्री नाथ सिद्ध कवच'

भावार्थ- ॐ जती गोरक्षनाथजी को नमस्कार है।

पार्वती जी ने कहा- हे महाप्रभु जो इस संसार में परम गोपनीय तथा मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाला है ओर जो अब तक आपने दूसरे किसी के सन्मुख प्रकट नहीं किया हो ऐसा कोई साधन मुझे बताइये।। १।।

श्री शिव जी कहते हैं- ऐसा साधन तो बस एक श्री नाथ जी का (**सिद्ध**) **कवच** ही है, जो गोपनीय से भी परम गोपनीय, पवित्र तथा सम्पूर्ण प्राणियों को उपकार (कल्याण) करने वाला है। हे महासती उसे श्रवण करो।। २।। नाथों के नौ नाथ हैं, जिन्हें (सिद्ध) नवनाथ कहते हैं। प्रथम नाम श्री आदिनाथ जी हैं दूसरे नाम श्री उदयनाथ जी हैं। तीसरा स्वरूप श्री

सत्यनाथ जी नाम से प्रसिद्ध हैं। चौथे नाथ जी को श्री सन्तोषनाथ जी कहते हैं।। ३।। पांचवे नाथजी का नाम श्री अचल अचम्भेनाथ जी है। नाथ जी के छठे रूप को कन्थड़नाथ जी कहते हैं। सातवें सिद्ध चौरंगीनाथ जी और आठवें माया स्वरूपी श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी नाम से प्रसिद्ध हैं।। ४।। नौवें नाथजी का नाम श्री शम्भु जती गुरू गोरक्षनाथ जी है। यह सर्व नाम सर्वज्ञ महात्मा ॐकार आदिनाथ जी द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं।।। ५।।

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे गोरक्ष चैव भयार्ताः शरणं गतः।।६।।
न तेषां जायते किंचिदशुभं रण-संकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोक दुःख भयं नहि।।७।।
यैस्तु भक्ता स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये गोरक्षं स्मरन्ति देवेन रक्षसे तान्न संशयः।।८।।
मृगस्थली तु गोरक्ष महाजती शेषासन!।
सर्वेन्द्रिय-रक्षायै ॐकारं ज्योति स्वरूपं।।९।।

भावार्थ- जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, रणभूमि में शत्रुओं से घिर गया हो, विषम संकट में फंस गया हो तथा इस प्रकार भय से आतुर होकर जो गुरू गोरक्षनाथ जी के शरण में प्राप्त हुए हों, उनका कभी कोई अमंगल नहीं होता, युद्ध के समय संकट में पड़ने पर भी उनके ऊपर कोई विपत्ति नहीं दिखायी देती। उन्हें शोक दुःख और भय की प्राप्ति नहीं हो सकती ।। ६-७।। जिन्होंने भक्ति पूर्वक श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी का स्मरण किया हो। उनका निश्चय ही अभ्युदय होता है। हे जती गोरक्षनाथजी जो तुम्हारा चिन्तन करते हैं उनकी तुम निःसन्देह रक्षा करते हो।। ८।। हे शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथजी आप मृगस्थली (नेपाल) में शेषों के आसनपर विराजमान हैं। आप ॐकार ज्योति स्वरूप हैं जो कि सर्व इन्द्रियों की रक्षा करते हैं।। ९।।

निरञ्जनो मृगासन सुधबुध मत्स्येन्द्र प्रियाः।
मृत्युंजय पद्मासना कुम्भ-हस्ते हरप्रियाः।।१०।।
ज्योति रूप धारानाथो सर्व जती योगावृढाः।
ज्ञानी हंस योगरूढ़ाः सर्वाभरणभूषिताः।।११।।
दृश्यन्ते ध्यानरूढ़ा योगीमुद्रा समाकुलाः।
शंखभस्मी शस्त्रशक्ति डमरूश्च नादायुधाश्च।।१२।।
खप्पर चिमटा चैव रूद्राक्ष-माला शैली च।
दण्डायुध त्रिशूलश्च मन्त्रायुधमुत्तमम्।।१३।।

भावार्थ- हे निरन्जननाथजी जो मृगासन पर आरूढ़ हैं: जो सुधबुधनाथ जी नाम से (अपने सतगुरू) श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी के प्रिय हैं और श्रीमत् भगवान हर की अर्थात भगवान शिव के प्रिय जो मृत्युंजय रूप से कमल के आसन पर विराजमान हैं तथा हाथों में कुम्भ धारण किये हैं ।। १०।। ऐसे ज्योति स्वरूप धारण किये हुए श्रीनाथ जी सर्व प्रकार से जती है जो योग साधना पर आरूढ़ हैं। वही ज्ञानी हंस (परंहंस) योग पर आरूढ़ हैं। और सभी प्रकार के आभूषणों से विभूषित हैं।। ११।। सम्पूर्ण योग मुद्रा से भरे हुए ध्यान में आरूढ़ दिखायी देते हैं। शंख, भस्मी, नाद, डमरू, खप्पर, त्रिशूल चिमटा, रूद्राक्ष माला शैली आदि परम शक्ति एवं मन्त्र धारण किये हुए हैं ।। १२-१३।।

शत्रुणां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं योगिनां च हिताय च ।।१४।।
आदेशोऽस्तु महायोगी महाघोर पराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभय विनाश्यते ।।१५।।

त्राहि गोरक्ष दुष्प्रेक्ष्ये शत्रुणां भयवर्धिनम्!।
प्राच्यां रक्षतु मा रवि, आग्नेय्या धूनी देवता।।१६।।
दक्षिणेऽवतु मिननाथ, नैऋत्यां खड़्दर्शणी।
प्रतीच्यां कन्थड़ रक्षेद्वायव्यां हिंगलाजिनी।।१७।।

भावार्थ– शत्रु के शरीर का नाश करना। भक्तों को अभयदान देना और योगीओं का कल्याण करना यही उनके शस्त्र धारण करने का उद्देश्य है।।१४।। आप महान योगी और महाघोर ऐसे पराक्रमी एवं महानबल और महान उत्साह वाले योगीराज आप महान भय का नाश करने वाले हो, आपको आदेश (नमस्कार) करता हूँ ।। १५।। आपकी ओर देखना भी (अत्यंत) कठिन है। शत्रुओं का भय बढ़ाने वाले हे श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथजी मेरी रक्षा करो पूर्व दिशा में रविनाथ (सूर्य देवता) रक्षा करे अग्निकोण में धूनी शक्ति, दक्षिण दिशा में मीननाथ जी नैवृत्य कोण में खड़्दर्शणी मेरी रक्षा करें । पश्चिम दिशा में गजबेली गजकन्थड़नाथ जी और वायव्य कोण में माता हिंगलाज योगिनी मेरी रक्षा करें।। १६-१७।।

उदीच्यां पातु सत्यनाथ ऐशान्यां कैलाशनाथम्।
ऊर्ध्वं सन्तोष मे रक्षेदधस्ताद् मा लक्ष्मीस्तथा।।१८।।
एवं दश-दिशो रक्षेद् गोरक्षा सिद्धि धारणकः।
क्षेत्रो मे चाग्रतः पातु गोपालः पातु पृष्ठतः।।१९।।
विमलो क्षोमपार्श्वे तु दक्षिणे सिद्ध चौरंगी।
शिखारूद्रउमापती रक्षेद मा मूर्ध्नि व्यवस्थिता।।२०।।
रूद्रधारी ललाटेच भ्रुवौ रक्षेद् निरामयी।
गोरक्षो च भ्रुवोर्मध्ये प्राणनाथश्च नासिके।।२१।।

भावार्थ– उत्तर दिशा में सिद्ध योगी सत्यनाथजी और ईशान्य कोण में कैलाशनाथजी (शिव) रक्षा करें। ऊपर की ओर से नाथ सिद्ध सन्तोषनाथ

जी तथा नीचे की ओर से योगिनी माँ लक्ष्मी आप मेरी रक्षा करें।। १८।। इसी प्रकार (सम्पूर्ण) सिद्धियों को धारण करने वाले सिद्ध योगी गुरू गोरक्षनाथजी दसों दिशाओं में मेरी रक्षा करें। महासिद्ध क्षेत्रनाथ जी (अर्थात गोरक्षनाथ जी-आगे आगे गोरक्ष जागे) आगे से और सिद्धयोगी गोपालनाथ जी पीछे की ओर से मेरी रक्षा करें।। १९।। हे जती विमलनाथजी (गोरक्ष) आप मेरे वाम भाग में और दक्षिण भाग में सिद्ध योगी चौरंगीनाथ जी (पूरणमल) रक्षा करें तथा हे उमापति (रूद्रनाथ जी) आप मेरे शिखा की रक्षा करें और श्री उमानाथ जी आप मेरे मस्तक पर विराजमान होकर रक्षा करें।। २०।। हे रूद्राक्ष धारण करने वाले रूद्रनाथ जी आप मेरे ललाटों की और निरामयनाथ जी आप मेरे भौंहों की रक्षा करें और हे शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी आप मेरे भौंहों में मध्य में (त्रिपुटी में) और (अविनाशी) प्राणनाथ जी आप मेरी नथुनों (प्राणअपान) की रक्षा करें।। २१।।

वामे चक्षुः कमलाच रक्षेन्मे दक्षिणे तु विमला ।।२२।।
त्रिकुटा चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोः श्रुताईनाथ।
कपोलो कपिलो रक्षेत्कर्णमूले तु कानीपा ।।२३।।
नासिकाया हवाई च उत्तरोष्ठे च काकचण्डी।
अधरेच सारस्वति जिह्वाया च महासरस्वति ।।२४।।
दन्तान् रक्षतु दरीया कण्ठदेशे तु स्कन्दमाता ।
घण्टिका चन्द्रघण्टा च खेचरनाथ च तालुके।।२५।।

भावार्थ- हे योगिनी माता कमलादेवी तुम मेरी वाम नेत्र की और माता योगिनी बिमलादेवी तुम मेरे दक्षिण नेत्र की रक्षा करो।। २२।। मेरे दोना नेत्र के मध्यभाग में (सिद्ध योगिनी) तारा त्रिकुटा और कानों में सिद्ध योगी श्रुताईनाथजी आप मेरी रक्षा करें तथा सांख्य सिद्ध श्री कपिलनाथजी कपालों की और सिद्ध योगी श्री कानिपानाथजी मेरे कानों के मूल भाग में रक्षा करें ।। २३।। हे पवन सिद्ध हवाईनाथजी आप मेरे नासिकामध्ये और

ऊपर के होंठ में ऋषी श्री काकचण्डीनाथजी आप रक्षा करें। नीचे के होंठ में महायोगी सारस्वतनाथजी तथा जिह्वामध्ये ज्ञान योगिनी माता महासरस्वती देवी आप मेरी रक्षा करें।। २४।। हे सिद्ध योगी दरियानाथ जी आप मेरे दांतों की और सिद्ध योगिनी स्कन्दमाता मेरे कण्ठ प्रदेश की रक्षा करें तथा योगिनी माता चन्द्रघण्टा आप मेरे गले की घण्टी (कण्ठ) की और खेचरी सिद्ध योगी खेचरनाथजी आप मेरे तालुओं में रहकर रक्षा करें।। २५।।

कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचि मे गुरूशब्दः।
ग्रीवाया गोरक्षनाथः च पृष्ठवंशे अचल अचम्भे।।२६।।
नीलनाथ बहिःकण्ठे नलिका निवृतीनाथः।
स्कन्धयोः भैरवो, बाहू मे बिरबंकनाथः।।२७।।
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेद् चक्रनाथ चाङ्गलीषु च ।
दक्षिणे मणिबन्ध च नारदवामे तु वक्र।।२८।।
वामे हस्ततली मन्जुच दक्षिणे तु नरमाई।
नखा भुवनेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्ष होमियो ।।२९।।

भावार्थ– हे नाथ योगिनी माता कामाक्षा देवी आप मेरे ठोड़ी की और सत्य सतगुरू शब्द (गुरूमंत्र) मेरी वाणी की रक्षा करें। सिद्ध योगी गोरक्षनाथजी आप मेरे ग्रीवा में और पृष्ठवंश (मेरूदण्ड) में (शेषस्वरूपी) सिद्ध योगी अचल अचम्भेनाथ जी आप निवास करके रक्षा करें।। २६।। हे (ॐकार स्वरूपी) नीलनाथजी आप मेरे कण्ठ के बाहरी भाग में और सिद्ध योगी निवृत्तीनाथजी आप मेरे कण्ठ के नलिका में रहकर रक्षा करें तथा दोनों कंधों में महासिद्ध भैरवनाथजी और मेरे दोनों भुजाओं में पवन पुत्र बीरबंकनाथ जी (हनुमानजी) आप मेरी रक्षा करें।। २७।। हे महायोगी सिद्ध चक्रनाथ जी आप मेरे दोनों हाथों में तथा अंगुलियों में रहकर रक्षा करें। हे भक्तिप्रिय नारददेवनाथ जी आप मेरे दक्षिण मणीबन्ध में और सिद्ध योगी वक्रनाथ जी आप मेरे वाम मणीबन्ध में रहकर मेरी रक्षा करें।। २८।।

हे महांसिद्ध मन्जुनाथजी आप मेरे वाम हथेली में और सिद्धयोगी नरमाईनाथ जी आप मेरे दक्षिण हथेली में रहकर मेरी रक्षा करें तथा योगिनी माता भुवनेश्वरी आप मेरे नखों की रक्षा करें और सिद्ध योगिनी माता होमियो (धुनी माता) गायत्री देवी आप मेरे कुक्षी (पेट) में रहकर मेरी रक्षा करें।। २९।।

वामे करतले सावित्रीच दक्षिणे तु सिद्धिदात्री।
ज्वालामुखी नखज्वाला सर्वाङ्ग सर्व संधिषु।।३०।।
हृदये सतगुरू च उदरे शक्ति रूद्रनाथः।
जठरे धीरनाथश्च वलीका च विरूपाक्षयः।।३१।।
वामे स्तनौच रक्षेन्मे महाशक्ति तु महाकाली ।
दक्षिणे स्तनौच रक्षेन्मे महागौरी तु महासती।।३२।।
नाभौ च ज्वाला रक्षेद् गुह्य माँ पद्मिनी तथा।
कटयां अडबंग रक्षेज्जानुनी भगाई तथा।।३३।।

भावार्थ– हे सती सावित्री माता आप मेरे वाम करतल की और हे सिद्ध योगिनी माँ सिद्धिदात्री आप मेरे दक्षिण करतल की रक्षा करें तथा मेरे नखों के तेज की, माता योगिनी ज्वालामुखी रक्षा करें और महासिद्ध सर्वांगनाथ जी (गोरक्षनाथ जी) आप मेरे समस्त संधियों में रहकर रक्षा करें।। ३०।। हे प्रिय सतगुरू जी आप मेरे हृदय में निवास करके रक्षा करें और नाथ सिद्ध रूद्रनाथ जी आप मेरे उदर में (स्थित होकर) रक्षा करें तथा सिद्धयोगी धीरनाथजी आप मेरे जठर की और नाथ सिद्ध विरूपाक्षनाथ जी आप मेरे वलीकाओं की रक्षा करें।। ३१।। हे जन्ममाता महाशक्ति महाकाली

आप मेरे वाम स्तनों की रक्षा करें तथा महासती महागौरी (पार्वती) आप मेरे दक्षिण स्तन की रक्षा करें।। ३२।। मेरे नाभी में (गोरक्षप्रिया) नाथ योगिनी ज्वाला देवी जी और गुह्य भाग में सिद्ध योगिनी माँ पद्मिनी देवी रहकर रक्षा करें । तथा श्री सिद्धयोगी अडबंगनाथ जी मेरे कटी भाग में और सिद्ध भगाईनाथजी आप मेरे घुटनों मे रहकर मेरी रक्षा करें।। ३३।।

शुक्रं सुकदेव मे रक्षेत् मल कोशं दुर्गास्तथा।
नाथ जालंधरो मेढ़ गुदे मयनावति च।।३४।।
वाम जंगे लंकनाथश्च दक्षिणे तु जम्भनाथः।
योनिं रक्षेत् कामाख्या च लोमे तु ब्रह्मचारिणी।।३५।।
जङ्घे महासिद्ध रक्षेद् गेहल्लारावलनाथः।
गुल्फयो भद्रनाथश्च च पादपृष्ठे तु मद्रश्च।।३६।।
पादाङ्गुलीषु वीरनाथ रक्षेदत्पादाधस्त भूचरः।
नखान् मानिकनाथश्च केशांश्चौघड़नाथः ।।३७।।

भावार्थ– हे जती सती सुकदेवनाथ जी आप मेरे वीर्य की रक्षा करें और माता योगिनी दुर्गा देवी आप मेरे मल की रक्षा करें। हे महासिद्ध योगीराज जालंधरनाथ जी आप मेरे लिगं की और ज्ञान योगिनी मयनावती योगिनी आप मेरे गुदा की रक्षा करें ।। ३४।। हे सिद्धयोगी लंकनाथ जी आप मेरे वाम जंघा की रक्षा करें तथा सिद्धयेागी जम्भनाथजी आप मेरे दक्षिण जंघा की रक्षा करें तथा हे कामरू पीठ की माता कामाख्या आप मेरे योनी की रक्षा करें और योगिनी सिद्ध देवी ब्रह्मचारिणी माता आप मेरे लोम की रक्षा करें।। ३५।। सम्पूर्ण सिद्धि प्रदान करने वाले महासिद्ध

गेहल्लारावलनाथ जी आप मेरे दोनों पिण्डलियों की रक्षा करें तथा हे सिद्ध योगी भद्रनाथ जी आप मेरे घुट्टियों में और सिद्ध योगी मद्रनाथजी आप मेरे दोनों चरणों के पृष्ठ भाग में रहकर रक्षा करें।। ३६ ।। हे सिद्ध वीरनाथ जी आप मेरे पैरों की अंगुलियों में और नाथ सिद्ध भूचरनाथजी आप मेरे पैरों के तलुओं में स्थित होकर रक्षा करें तथा हे महासिद्ध मानिकनाथ जी आप मेरे नखों में और सिद्धयोगी औघड़नाथ जी आप मेरे केशों में रहकर रक्षा करें।। ३७ ।।

अस्थीनि टिण्टीणी रक्षेद् अस्थिमूले तु चर्पटी।
देहरस सनक च रक्षेन्मे सनातनस्तथा।।३८।।
कर्पूर कोहली रक्षेद् सिद्धस्तु रतननाथ।
धमनी श्रृंगेरीनाथश्च रक्षेद् संवेदना च तारा।।३९।।
रोम कूपेषु मत्स्येन्द्र त्वचं प्रकाशनाथस्तथा।
रक्त मज्जावसामासान्यास्थिमेदासि उदयः।।४०।।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तञ्च पिप्पलनाथः ।
स्वेदञ्च रक्षेद् भवानी कफे सहजाईस्तथा।।४१।।

भावार्थ– हे सिद्धयोगी टिण्टीणीनाथजी आप मेरे अस्थियों में तथा सिद्धयोगी चर्पटीनाथ जी आप मेरे अस्थिमूल में रहकर मेरी रक्षा करें तथा हे ज्ञान सिद्ध सनकनाथजी एवं सिद्धयोगी सनातननाथ जी आप मेरे सम्पूर्ण देहरस मे स्थित होकर रक्षा करें।। ३८ ।। हे सिद्धयोगी पीर रतननाथ जी आप मेरे कर्पूर कोहली में निवास करके रक्षा करें। तथा हे नाथसिद्ध श्रृंगेरीनाथ जी आप मेरे धमनियों में और हे माता योगिनी तारा (त्रिकुटा) देवी आप मेरी संवेदनाओं में रहकर मेरी रक्षा करें।। ३९ ।। हे मायास्वरूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी आप मेरे रोमावलियों के छिद्र में और मेरे त्वचा में सिद्ध योगी प्रकाशनाथ जी आप स्थित होकर रक्षा करें तथा हे (धरित्री

स्वरूपा माँ पार्वती जी के अवतार) महामाया सिद्ध योगी उदयनाथ जी आप मेरे रक्त में, मज्जा में वसा में,मास हड्डियों में और मेद में रहकर रक्षा करें।। ४०।। हे महायोगिनी माता कालरात्री आप मेरे आंतों की और पित्त की नाथसिद्ध पिप्पलनाथ जी रक्षा करें तथा हे माता जोगन भवानी देवी आप मेरे पसीने की और सिद्धयोगी सहजाईनाथ जी आप मेरे कफ की रक्षा करें।। ४१।।

निन्द्रां च मनसाई रक्षेद् आलस्यं सूरानन्दनाथः।
क्षुधां गंगामाता च तृष्णा रक्षेद् ब्रह्माई।।४२।।
क्रोधस्य रक्षेद् दयानाथ घोड़ाचोलीपा तु द्वेषाः।
लज्जा लधाई रक्षेन्मे ममता एकनाथस्तथा।।४३।।
चलनं कनकाई च वलनं तु याज्ञवाल्यक्यः।
आकुंचन प्रसारणे रक्षेन्मे साहिरोबानाथः।।४४।।
प्राच्यां छाया रक्षेद् देवाश्च उदीच्यां तु धुन्धुकारं ।
प्रातीच्यां तु कोरण्ट, दक्षिणे च गरीबनाथ।।४५।।

भावार्थ– हे मनसंयमी सिद्ध मनसाईनाथ जी आप मेरे निन्द्रा की और (नाद में आनन्द देने वाले) सिद्ध सुरानन्दनाथ जी आप मेरे आलस्य की रक्षा करें। हे पतित् पावन माँ गंगा आप मेरे क्षुधा में और ब्रह्मज्ञानी सिद्ध ब्रह्मनाथ जी आप मेरे तृष्णा में रहकर मेरी रक्षा करें ।। ४२ ।। हे दयाधिन सिद्ध दयानाथ जी आप मेरे क्रोध की और सिद्ध योगी घोड़ाचोलीपानाथ जी आप मेरे द्वेष की रक्षा करें तथा हे सिद्ध योगी लधाईनाथ जी आप मेरे लज्जा में और हे महासंय्यमी सिद्ध एकनाथजी आप मेरी ममता में रहकर मेरी रक्षा करें।। ४३।। हे रम्मतसिद्ध कनकाईनाथ जी आप मेरे चलने की और नाथसिद्ध याज्ञवाल्यक्यनाथ जी आप वलन की रक्षा करें तथा हे पवन हारी सिद्ध साहिरोबानाथ जी आप आकुंचन प्रसारण

में रहकर मेरी रक्षा करें।। ४४।। हे छाया पुरूष क्रिया सिद्धों, देवनाथजी आप मेरे पूर्व दिशा की छाया की और नाथ सिद्ध धुन्धुकारनाथ जी आप मेरे उत्तर दिशा की छाया की रक्षा करें तथा हे छायापुरूष क्रिया सिद्धयोगी कोरण्टनाथ जी आप मेरी पश्चिम दिशा की छाया में और हे नाथ योगी गरीबनाथ जी आप मेरी दक्षिण दिशा की छाया में रहकर मेरी रक्षा करें।। ४५।।

रस रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शच काया।
अहंकार मनो बुद्धि रक्षेन्मे क्षेत्रनाथजी।।४६।।
यः सिद्ध बुद्धिनाथ च रक्षेत् सर्वतः मम चित्तं।
ज्ञान रक्षे ज्ञानेश्वरञ्च वैराग्य तु गुरूकृपाः।।४७।।
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
यः गोरक्ष च में रक्षेत् प्राण कल्याण शोभनः।।४८।।
रूचचि रक्षेन्मे सिद्धपादं ब्रह्मरन्ध्रश्च मार्कण्डेय।
सत्व रजस्तमश्चैव रक्षेत् आदिनाथः सदा।।४९।।

भावार्थ– रस रूप गन्ध शब्द और स्पर्श इन विषयों का अनुभव करते समय हे सिद्ध वज्रयोगी कायानाथ जी आप मेरी रक्षा करें। तथा श्री परम सिद्ध क्षेत्रनाथजी (अर्थात गोरक्षनाथ जी) आप मेरे मन बुद्धि अहंकार में स्थित होकर रक्षा करें।। ४६।। (हे चित्त पर विजय पाने वाले) सिद्ध बुद्धिनाथ जी आप मेरे चित्त में विराजमान होकर सदा सर्वदा रक्षा करें तथा हे ज्ञान के ईश्वर सिद्ध योगी ज्ञानेश्वर नाथ जी आप मेरे ज्ञान में स्थित होकर रक्षा करें और हे मेरे परम कृपालु सतगुरू जी आप मेरे (विरक्ति) वैराग्य में विराजमान होकर मेरी रक्षा करें।। ४७।। हे सम्पूर्ण योग और सिद्धियों के महाजती गुरू गोरक्षनाथ जी आप मेरे प्राण अपान व्यान, उदान और समान (पंच वायु की) रक्षा करें।। ४८।। हे समाधिपाद सिद्ध योगी सिद्धपादनाथ जी आप मेरी रूचियों की रक्षा करें और हे ब्रह्मज्ञानी नाथ योगी श्री मार्कण्डेयनाथ जी आप मेरे ब्रह्मरन्ध्र में विराजमान होकर मेरी रक्षा करें तथा हे अलख

निरन्जन आदिनाथ जी आप मेरे सत्वगुण, रजोगुण और तामसगुण में स्थित होकर मेरी रक्षा करें।। ४९।।

अग्निना पातु कूष्माण्डा च जले तु नाग पद्मिनी।
वायुनापातु तुलजाच तेजमध्ये तु कात्यायनी।।५०।।
आकाशे पातु मातंगी पृथ्वी मध्ये तु मनसा च।
अन्नपूर्णी रक्षेद् भोजं च भ्रमणे तु शैलपुत्री ।।५१।।
गोरक्षो ध्यानं च रक्षेत् शून्यस्थिते तु ॐकारः।
दशमेद्वार पराशक्ति योग रक्षेत् परमतत्व।।५२।।
इडा पिंगला सुषम्णाः प्राणमार्गे समाश्रिताः।
सततं प्राण रक्षेन्मे सोम सूर्योऽग्नि देवता।।५३।।

भावार्थ– हे माता योगिनी कूष्माण्डा आप मेरी अग्नि में और योगिनी माता नाग पद्मिनी आप मेरी जल में रक्षा करें तथा हे नाथ योगिनी तुलजा देवी आप मेरी वायुमध्ये और हे माता कात्यायनी आप मेरी तेज मध्ये रहकर रक्षा करें।। ५०।। हे सिद्ध योगिनी मातंगी आप मेरी आकाश में और माता योगिनी मनसाधाती आप धरती में मेरी रक्षा करें तथा भोजन में नाथ सिद्ध अन्नपूर्णी और भ्रमण में हिमालय पुत्री तपस्वी शैलपुत्री आप मेरी रक्षा करें।। ५१।। हे गुरू गोरक्षनाथ जी आप मेरे ध्यान में रक्षा करें और शून्य स्थिति में ॐकार (प्रणवनाथ जी) आप मेरी रक्षा करें तथा मेरी दशमें द्वार (साधना) में हे पराशक्ति आप रक्षा करें और हे परमतत्व आप मेरी योग साधना में रक्षा करें।। ५२।। हे चंद्र (सोम) देवता एवं सूर्य देवता तथा अग्नि देवता आप मेरे इड़ा पिंगला और सुषुम्णा के हठयोग क्रिया में स्थित रहने वाले प्राण की सदा सर्वदा रक्षा करें।। ५३।।

मूलाधार पद्मकोशे च रक्षे त् कन्थड़नाथं।
महापद्म बिन्दुस्थाने रक्षेद् नीलनाथस्तथा ।।५४।।

लिंगचक्र स्वाधिष्ठाने रक्षेन्मे सत्यनाथ च।
सुषुम्ण महापद्म च रक्षेन्मे मायाशक्ति च।।५५।।
कुण्डलिनी महाशक्ति कटी स्थाने समाश्रिताः।
गर्भस्थाने गर्भचक्र रक्षेत् अग्निदेवस्तथा ।।५६।।
सप्तम् पद्म मणिपूरं च रक्षेत् सन्तोषनाथः।
अष्टम्पद्म लिंगचक्र रक्षेत् रूद्रनाथस्तथा।।५७।।

भावार्थ– हे ज्ञान देवता सिद्ध गजबेली गजकन्थड़नाथ (गणेश) आप मेरे प्रथम चक्र, मूलाधार कमल कोश की रक्षा करें और हे नीलनाथ जी आप मेरे द्वितीय चक्र महापद्म की (गुदालिंग के बीच में) रक्षा करें ।। ५४।। हे नवनाथ सिद्ध सत्यनाथ जी आप मेरे तृतीय चक्र स्वाधिष्ठान (लिंगस्थान) की रक्षा करें और मेरा चौथा चक्र सुषुम्ना चक्र (सुषुम्ना के स्थान) की महामाया महाशक्ति (गंगा) योगिनी आप वहां विराजमान होकर रक्षा करें।। ५५।। हे नाथ सिद्ध अग्निदेवता (धुना) आप मेरे गर्भ स्थान में पांचवे गर्भचक्र की और कटी स्थान में छठे चक्र कुण्डलिनी की रक्षा करें।। ५६ ।। हे विष्णु के अवतार सिद्धयोगी सन्तोषनाथ जी आप मेरे सप्तम चक्र मणिपुर चक्र (नाभि स्थान) की रक्षा करें तथा हे नाथ सिद्ध रूद्रदेवता नाथ जी आप मेरे अष्टम चक्र लिंगचक्र (लिंगस्थान) की रक्षा करें।। ५७।।

हृदये अनहद चक्रे च रक्षेन्मे सतगुरूदेव।
विशुद्ध रक्षेत् हंस प्राणनाथः प्राण-पद्म।।५८।।
चक्र अवल रक्षन्मे त्रिग्रंथी त्रिंदेवस्तथा।
चिबुक स्थाने पद्म च चिबुक रक्षेन्मे प्राणनाथः।।५९।।
चक्र चतुर्दश रक्षेद् प्राणनाथं च बलवान ।
कर्णमूले पद्म रक्षेन्नाद ब्रह्मदेवस्तथा।।६०।।

आज्ञाचक्र च भ्रूस्थाने रक्षेद् आदिनाथ सदा।
चक्रत्रिवेणी भ्रमध्ये च रक्षेन्मे आकाशनाथः।।६१।।

भावार्थ– हे मेरे प्रिय सतगुरू देव आप मेरे नौवें चक्र जो हृदय में अनहद चक्र में निवास करके मेरी रक्षा करें तथा मेरे दशवे चक्र विशुद्ध चक्र जो कन्ठस्थान में है वहां हंसनाथ जी और ग्यारह प्राणचक्र जो गलस्थान में है वहां सिद्ध योगी प्राणनाथ जी आप विराजमान होकर मेरी रक्षा करें।। ५८।। हे तीनों देवता (ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर) आप मेरे बारहवें अवल चक्र (त्रग्रंथी स्थान में) रहकर मेरी रक्षा करें तथा मेरे तेरहवें चिबुक चक्र जो चिबुक स्थान में है वहां। प्राणनाथ जी आप मेरी रक्षा करें।। ५९।। हे पवन सिद्ध प्राणनाथ जी आप मेरे चौदहवें बलवान चक्र (नासिका स्थान) में रहकर रक्षा करें तथा मेरे कान के तले पंद्रहवें कर्णमूल कमल चक्र में (सिद्धयोगी सृती शक्तिवान्) नाद ब्रह्मदेवनाथ जी आप मेरी रक्षा करें ।। ६०।। हे आदि पुरूष अलख निरन्जन आदिनाथ जी आप मेरे सोलहवें आज्ञाचक्र में (भ्रू स्थान में) रहकर मेरी रक्षा करें तथा हे महासिद्ध आकाशनाथ जी आप मेरे सत्रहवें त्रिवेणी चक्र (भ्रूमध्ये) स्थित होकर रक्षा करें।। ६१।।

भालस्थाने पद्मचन्द चैव चक्रेऽमृताय।
अमृतपानं पूर्णज्ञानं सदा रक्षेछ् चंद्रनाथः।।६२।।
ब्रह्मद्वार पद्मचक्र रक्षेन्मे ब्रह्मनाथश्च ।
भाले चक्रे अंकुल च रक्षेद् नाग वासुकी ।।६३।।
मूर्धास्थाने ब्रह्मरन्ध्रश्च तालु चक्रस्तथा।
यः गोरक्ष सर्व रक्षेत् ज्ञान रूपेण संस्थिता।।६४।।
चक्रबल महापद्मश्च रक्षेद् अलक्षनाथः।।६५।।

भावार्थ– हे सोलह सिंगार ज्ञान सिद्ध योगी चंद्रनाथजी आप मेरे अठारहवें कमल चक्र, चन्द्र चक्र (भालस्थान में) एवं मेरे उन्नीसवें अमृत चक्र जो (भाल के ऊपरी स्थान में है) यहां स्थित होकर रक्षा करें।। ६२।। हे ब्रह्मनाथ जी आप मेरे बीसवें चक्र जो भाल प्रदेश के ऊपरी भाग में ब्रह्मद्वार नामक पद्मचक्र है उसमें स्थित होकर रक्षा करें । तथा हे पातालेश्वर नाथ सिद्ध वासुकी नागराज आप मेरे इक्कीसवें चक्र अकुल (कुण्डलिनी) पद्म चक्र में स्थित होकर मेरी रक्षा करें।। ६३।। हे शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी आप मेरे बाईसवें चक्र जो मूर्धास्थान में ब्रह्मरन्ध्र पद्म चक्र नाम से है और तेईसवां पद्मचक्र जो भ्रमर गुफा में तालु चक्र नाम से है ! यहां ज्ञान स्वरूप होकर सदा सर्वदा विराजमान होकर मेरी रक्षा करें ।। ६४।। हे सिद्धयोगी अलक्षनाथजी आप मेर (भ्रमर गुफा स्थान के चौबीसवें चक्र) महामद्म बलचक्र या अलक्षबल चक्र में विराजमान होकर मेरी रक्षा करें।। ६५।।

अकण्ठ पीठे पुण्यागार भ्रमर गुफा च स्थिता।
यः अकलनाथं च सर्वे रक्षेद् शक्तिस्तथा ।।६६।।
कोलाहाट परमशून्यं शिखा मण्डले स्थिता।
अनन्त शक्ति प्रकाशे च रक्षेन्मे अनन्तनाथः।।६७।।
वज्रदण्ड महापद्म निरालंब स्थाने स्थिताः।
तेज पुञ्ज महादीप्ति रक्षेत् महाविशालः ।।६८।।
निरालंब उच्च स्थाने, चक्र असंख्याः स्थिता।
असंख्य शक्ति दीप्तिश्च सर्वं रक्षेद् सतगुरू।।६९।।

भावार्थ– हे अद्भुत शक्ति वाले अकलनाथ जी आप मेरे भ्रमर गुफा में स्थित अर्थात् अकंठपीठ में पच्चीसवां चक्र जो पुण्यागार नाम से है, उसमें

विराजमान होकर मेरी रक्षा करें।। ६६ ।। हे अनन्त शक्ति वाले पूर्ण प्रकाशी अनन्तनाथ जी आप मेरे छब्बीसवें महापद्म जो शिखा मण्डल में कोलाहाट (परमशून्य) नाम से स्थित है उस पद्मचक्र में विराजमान होकर मेरी रक्षा करें।। ६७।। हे विशाल तेज पुन्ज, महाद्विप्तिवान नाथ सिद्ध महाविशालनाथ जी आप मेरे निरालंब स्थान में स्थित महापद्म वज्र दण्ड चक्र में विराजमान होकर मेरी रक्षा करें।। ६८।। हे मेरे परम प्रिय असंख्य योगी, असंख्य शक्ति असंख्य वर्णी, शुद्ध प्रकाशी, असंख्य चक्र समाया हुवा, असंख्य मातृकावलि, असंख्य सत्गुरू के उच्च स्थान परम असंख्यनाथ सतगुरू जी आप मेरे अन्तिम अट्ठाईसवें महापद्म जो निरालंब स्थान में स्थित असंख्यचक्र में विराजमान होकर मेरी रक्षा करें।। ६९।।

शून्यश्च परम शून्ये एक विंशोऽऽब्रह्माण्डेय।
यः गोरक्षनाथं च सर्वे, रक्षेद् ज्योति रूपस्थिताः।।७०।।
स्थल बिलेशाय रक्षेद् सूक्ष्म सूक्ष्म सनत्कारश्च।
सनन्दन-कारणेऽस्तु महाकारणे प्रभुदेवः।।७१।।
पंचकोषा सिद्धासनञ्च त्रिगुणे तु गौरवनाथा।
अन्तःकरेण गुणातीतः रक्षेन्मे सिद्ध शाबरः।।७२।।
पिण्डेऽस्य सप्तद्वीपे च रक्षेद् बालगुन्दाई च।
पंचकोषो विकाराय, रक्षेन्मे गहीणीनाथः।।७३।।

भावार्थ– हे ज्योति स्वरूपी गुरू गोरक्षनाथ जी आप मेरे साधना के शून्य के परम शून्य में और इक्कीस ब्रह्माण्ड में स्थित होकर मेरी रक्षा करें ।। ७०।। हे सिद्धयोगी बिलेशायनाथजी आप मेरी स्थूल रूप में और नाथ सिद्ध सनत्कुमारनाथ जी आप मेरी सूक्ष्म रूप में विराजमान होकर मेरी रक्षा करें तथा हे महासिद्ध सनन्दननाथजी आप मेरे कारण में और हे सिद्धयोगी प्रभुदेवनाथ जी आप मेरी महाकारण में स्थित होकर रक्षा करें।। ७१।।

हे आसन सिद्धयोगी सिद्धासननाथ जी आप मेरे पंच कोष (अन्नमय, मनोमय, प्राणमय, विज्ञानमय, आनन्दमय) में रहकर मेरी रक्षा करें तथा हे महागुणी सिद्ध गौरवनाथजी आप मेरे तीनों शरीर (स्थूल, सूक्ष्म, कारण) या तीनों गुण (रज, तम, सत) में रहकर मेरी रक्षा करें तथा हे सिद्धयोगी शाबरनाथ जी आप मेरे अन्तःकरण (मन, संकल्प, विकल्प, बुद्धि, अहंकार) में स्थित होकर मेरी रक्षा करें।।७२।। हे बालगुंदाईनाथ जी आप मेरे शरीर मे सप्तद्वीप जम्मूद्वीप (मज्जा में), शाख द्वीप (हड्डी) में) सूक्ष्मद्वीप (नाड़ियों में), क्रौचद्वीप(त्वचा में), गोमयद्वीप (रोमों में), श्वेतद्वीप (नखों में), प्लक्षद्वीप (माँस में) इस प्रकार सप्तद्वीपों में रहकर रक्षा करें तथा हे सिद्धयोगी गहीणीनाथजी आप मेरे पंचकोषों विकारों में (काम, क्रोध मोह, मद, मत्सर, लोभ, अहंकार) इनमें रहकर मेरी रक्षा करें।। ७३।।

नवखण्डादि पिण्डेऽस्य, रक्षेद्नाथः बालकश्च।
अष्ट शैले कायस्य रक्षेन्मे मेरूनाथस्तथा।।७४।।
सप्तऋषि च पिण्डस्य रक्षेद् सिद्ध प्रौढ़नाथः।
वाणी चतुर्खानी च सर्व रक्षेन्मे गोरक्ष।।७५।।
पात्र चतुर्थ कायस्य रक्षेन्मे भुसकाईनाथ।
चतुःक्रूराणां पिण्डस्य सर्वतः रक्षेत् अल्लम।।७६।।
सप्त स्वर्ग पाताले च रक्षेन्मे नागनाथस्तथा।
ग्रहनक्षत्रे तारां च, सदा रक्षेद् नीलनाथः।।७७।।

भावार्थ– हे नाथयोगी सिद्ध बालकनाथ जी आप मेरे शरीर के नव खण्डों की [अर्थात् भारतखण्ड (गुदाद्वार में) काश्मीर खंड (लिंग छिद्र में) कर्परखण्ड (मुख्य लिंग में) श्री खण्ड (दाहिनी नासिका में) शंख खण्ड (बायीं नासिका में) पादखण्ड (बांये नेत्र में) गान्धार खण्ड (दायें नेत्र में) कैवर्त खण्ड (बायें कान मे) महामेरू खण्ड (दायें कान में)] इन

खण्डों में निवास करके मेरी रक्षा करें तथा हे ज्ञानयोग के महामेरू श्री सिद्ध मेरूनाथ जी आप मेरे शरीर के अष्ट कुल पर्वत की अर्थात [सुमेरू पर्वत (मेरूदंड में) कैलाश पर्वत (मस्तक में) हिमालय पर्वत (पीठ में) मलय पर्वत (बायें कन्धे में) मन्दराचल पर्वत (दायें कन्धे में) विन्ध्यांचल पर्वत (बायें कान में) मैनाक पर्वत (दायें कान में) श्री शैल पर्वत (ललाट में) एवं उंगलियों में अन्यान्य पर्वत] इन सभी पर्वतों की आप रक्षा करें ।। ७४ ।। हे नाथसिद्ध योगी प्रौढ़नाथजी आप मेरे समस्त काया के अन्दर सप्त ऋषि अर्थात [वशिष्ठ (हृदय में) विश्वामित्र (लिंग में) भारद्वाज (पेट में) जमदग्नि (नाभि में) गौतम (अमाशय) अत्रि (मस्तक में) कश्यप (गुदा में)] इनमें रहकर मेरी रक्षा करें तथा हे गुरू गोरक्षनाथ जी आप मेरी चार बानी अर्थात [परा (मूलाधार में) पश्यन्ति (हृदय में) मध्यमा (कण्ठ में) वैखरी (मुख में) इन बानीयों में तथा मेरे चार खानियों में अण्डज, (पक्षी, सर्पादि में) जरायुज (नर पशु में) उद्विज (वृक्षादि में) स्वेदज् (जूं में)] इनमें रहकर मेरी रक्षा करें।। ७५ ।। हे नाथसिद्ध भुसकाईनाथ जी आप मेरे काया के चार पात्र (सिद्ध ससिद्ध अतीत, सुपात्र) इनमे रहकर मेरी रक्षा करें तथा हे नाथसिद्ध योगी अल्लमनाथ जी आप मेरे शरीर के चार कुराण (अमूर, जमूर, अकुरान, फकुरान) इनके अन्दर रहकर मेरी रक्षा करें।।७६ ।। हे शेष अवतार नाथसिद्ध नागनाथ जी आप मेरे काया के अन्दर सप्त स्वर्ग (मृत्युलोक, देवलोक, गंधर्वलोक, अधिपतिलोक, इन्द्रलोक, ब्रह्मलोक पित्रुलोक) एवं सप्त पाताल में [सत्तातल (पैर के अंगूठे में) महातल (अंगूठे के अग्रभग में) रसातल (पाद पृष्ठ में) सुतल (गट्टे में) वितल (जंघा में) अतल (जानू में) पाताल (पादनल में)] इनमें निवास करके मेरी रक्षा करें तथा हे नीलकण्ठनाथ सिद्ध नीलनाथ जो

महाराज आप मेरी काया के अन्दर जो नव ग्रह सत्ताईस नक्षत्र (माँस पेशियों में उर्मि पुजों में) हैं तथा असंख्य तारे (हड्डियों में) है उनमें निवास करके मेरी सदा सर्वदा रक्षा करें।। ७७।।

नवनदी च पिण्डस्य सदा रक्षेद् मे अलिलम्।
चतुर्वर्णो चतुर्वेदो च रक्षेद् सत्यनाथस्तथा।।७८।।
विभिन्न लोके पिण्डस्य रक्षेन्मे पराशक्ति च।
पंचनियमे रक्षेन्मे सर्वं सतगुरूस्तथा ।।७९।।
प्रातः रक्षेन्मे सूरत कालनाथं च रात्रौ।
जन्म मृत्यु जरा व्याधि च रक्षेन्मे सिद्ध नवनाथं।।८०।।
जारंमारंस्तंभनं च रक्षेन्माता तु महाकाली।
उच्चाटनं च सम्मोहनं रक्षेद् तु बगलामुखी।।८१।।

भावार्थ– हे पतित पावन अलीलनाथ जी आप मेरे काया में स्थित नवनदियाँ एवं उपनदियाँ [अर्थात (ईड़ा नाड़ी में) गंगा (पिंगला में) जमुना (सुषम्ना में) सरस्वती (अन्य नाड़ियों में) चन्द्रभागा, पिपासा, शतरूद्रा, नर्मदा एवं (बहत्तर हजार नाड़ियों में) छोटी एवं पतली उपनदियाँ] इन सबमें स्थित होकर आप मेरी रक्षा करें तथा हे जलस्वरूप सत्यनाथ ब्रह्मा जी आप मेरी काया के अन्दर चार वर्ण [(सदाचार में) ब्राह्मण, (शौर्य में) क्षत्रिय, (व्यवसाय में) वैश्य और (सेवा भाव में) शूद्र] तथा चार वेदों में [(ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद)-(मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार)] निवास करके मेरी रक्षा करें ।।६८।। हे अपरंपार सर्व शक्तिमान पराशक्ति आप मेरी काया में विभिन्न लोक अर्थात् (मूलाधार में) भूः पृथ्वीलोक (लिंग में) भुवः लोक (नाभि में) स्वः लोक (मेरुदण्ड

के मूल में) महालोक (मेरुदण्ड के कुहर में) जनः लोक, (मेरूदण्ड के नाल में) तपः लोक (मूलाधार कमल पुष्प में) सत्यलोक, (कुक्षि में) विष्णुलोक (हृदय में) रूद्रलोक (वक्षस्थल में) ईश्वर लोक (कण्ठ में) नीलकण्ठ लोक (तालुद्वार में) शिव लोक (जिह्वा मूल में) भैरवलोक (ललाट में) अनादि लोक (भृकुटि में) और (शंखनाडी में) कुललोक (ब्रह्मरन्ध्र में) परब्रह्मलोक (अर्ध्व पुष्प सहास्त्रगार में) परा लोक (सहस्रार के ऊपर त्रिकुट में) त्रिशिखर लोक] इन सभी लोक में स्थित होकर मेरी रक्षा करें तथा हे मेरे सतगुरू जी आप मेरे काया में पंच नियमों में (ईश्वर चिन्तन, स्नानादि, अतिथि सेवा, सत्संग, सन्ध्या-वन्दन) इनमें निवास करके मेरी रक्षा करें।। ७९।। हे सिद्धयोगी सूरतनाथ जी आप मेरी प्रातः तथा हे नाथ सिद्ध कालनाथ जी आप मेरी रात्रि में रक्षा करें तथा हे नवनाथों के नवनाथ सिद्धों आप मेरी जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधियों से रक्षा करें ।। ८०।। हे काली जगद्जननी महाकाली देवी आप मेरी जारन, मारन, स्तंभन इन विद्याओं में रक्षा करें तथा हे महा शक्तिशाली माता बगलामुखी आप मेरी उच्चाटन, सम्मोहन इन विद्याओं में रक्षा करें।। ८१।।

आयुः रक्षतु नागार्जुन धर्म रक्षतु धर्मनाथः।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मी च धन विद्याः च त्रिशक्ति।।८२।।
गोत्रम् षोडशी मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष मातंगी।
पुत्रान्मे रक्षेच्चन्द्रनाथो भार्यां रक्षतु भैरवी ।।८३।।
शिष्यं रक्षेन्मे मल्लिकानाथः पन्थं रक्षतु अष्ट पीर।
पन्थानं भर्तृहरि रक्षेन्मार्गं मस्तनाथस्तथा।।८४।।
भेष भगवान् महासभा रक्षेद् नाथद्वारे मे जती गोरक्षः।
राजद्वारे महालक्ष्मी गोरक्ष सर्वतः स्थिता।।८५।।

भावार्थ– हे नाथ सिद्ध रससिद्ध (आयुर्वेदिक) योगी नागार्जुननाथ जी आप मेरे आयु की रक्षा करें। सिद्ध योगी धर्मनाथ जी आप मेरे धर्म की रक्षा करें यश, कीर्ति, लक्ष्मी धन दौलत ज्ञान विद्या की हे नाथ सिद्ध योगिनी मातायें त्रिशक्ति (महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती) आप मेरी रक्षा करें।। ८२।। हे सिद्ध योगिनी माता षोडशी। आप मेरे गोत्र में स्थित होकर रक्षा करें और नाथ सिद्ध कुलस्वामिनी माता मातंगी आप मेरे पशुओं की रक्षा करें। हे सोलह कला सम्पूर्ण नाथ सिद्ध चन्द्रनाथ जी आप मेरे पुत्रों की रक्षा करें और नाथ सिद्ध अघोरी योगिनी भैरवी माता आप मेरी पत्नी की रक्षा करें।।८३।। हे सिद्ध योगी श्री मल्लिकानाथ जी महाराज आप मेरे शिष्यों की रक्षा करे और हे नाथ सिद्ध (आठमान पीरों) अष्ठपीरों आप मेरे पंथ (श्रीनाथ समप्रदाय के बारह पंथ) की रक्षा करें। हे सिद्ध योगी भर्तृहरिनाथ जी (विचारनाथ जी) आप मेरे पथ पद यात्रा की रक्षा करें और नाथ सिद्ध शिरोमणि प्रत्यक्ष गुरू गोरक्षनाथ अवतार बाबा मस्तनाथ जी आप मेरे मार्ग की रक्षा करें।। ८४।। हे मेरे (नाथ सम्प्रदाय के) इष्ट भेष भगवान आप मेरे योगी महासभा के [मेले में, यात्रा (रम्मतो में) में सम्पूर्ण नाथ अखाड़े में, कुम्भ मेलों में, नाथ सभाओं में धर्म प्रचार, प्रसारों में, व्याख्यानों मे नाथ भाष्य में, संभाषणों में अर्थात सम्पूर्ण नाथ सिद्ध सम्प्रदाय के अनुयायी इत्यादि] में विराजमान होकर मेरी रक्षा करें तथा हे शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी आप नाथ सिद्धों के दरबार (नाथों का दलीचा) में मेरी रक्षा करें। राजा के दरबार में या राजसभा में योगमाता महालक्ष्मी मेरी रक्षा करें तथा सब ओर व्याप्त रहने वाले सर्व सर्वव्यापक शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी आप सम्पूर्ण भयों से मेरी रक्षा करें।। ८५।।

रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे नाथः सतगुरो पापनाशकः।।८६।।

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र कुत्रापि गच्छति।।८७।।
तत्र तत्रार्थलाभश्च लाभाय सार्वकामका।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्।।८८।।
निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्।।८९।।

भावार्थ– हे शम्भुजति गुरू गोरक्षनाथ जी जो स्थान कवच में नहीं कहा गया हो, अतएव रक्षा रहित है वह सब आपके द्वारा सुरक्षित हो क्योंकि आप सतगुरू और पाप विनाशक हो।। ८६ ।। यदि अपने शरीर का भला चाहते हो तो मनुष्य बिना कवच के कहीं एक पग भी न जाये-कवच का पाठ करके ही यात्रा करे। कवच के द्वारा सब ओर से सुरक्षित मनुष्य जहां-जहां भी जाता है वहां उसे धनलाभ होता है तथा सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि करने वाले लाभ की प्राप्ति होती हे। वह जिस-जिस अभीष्ट वस्तु का चिन्तन करता है उसको निश्चय ही प्राप्त कर लेता है।। ८७-८८ ।। कवच से सुरक्षित मनुष्य निर्भय हो जाता है। युद्ध में उसकी पराजय नहीं होती वह तीनों लोकों में पूज्यनीय हो जाता है।। ८९ ।।

इदं तु नाथ कवचं देवानामपि दुर्लभम्।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसंध्यं श्रद्धयान्वितः।।९०।।
योगी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्यु विवर्जितः।।९१।।
नश्यन्ति व्याधयः सर्वाः लता विस्फोटकादयः
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम्।।९२।।

भावार्थ– श्री नाथजी का यह कवच देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। जो प्रति दिन नियम पूर्वक तीनों संध्याओं के समय श्रद्धा के साथ इसका पाठ करता है उसे योगीओं की (साधना की, सिद्धि की) कला प्राप्त होती है तथा वह तीन लोक में कहीं भी पराजित नहीं होता। इतना ही नहीं वह अपमृत्यु से (अकाल मृत्यु या अग्नि, जल, बिजली एवं सर्पदंश आदि) रहित हो सौ, से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहता है।। ९०-९१।। मकरी, चेचक और कोढ़ आदि उसकी सम्पूर्ण व्याधियां नष्ठ हो जाती हैं। कनेर, भाँग, अफीम, धतूरे आदि को स्थावर विष, साँप और बिच्छू आदि के काटने से चढ़ा हुआ जंगम विष तथा अहिफेन और तेल के संयोग आदि से बनने वाला कृत्रिम विष, यह सभी प्रकार के विष दूर हो जाते हैं । उसका असर नहीं होता।। ९२।।

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्र यन्त्राणि भूतले।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ।।९३।।
सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्याश्च महाबलाः।।९४।।
ग्रहभूत पिशाचाश्च यक्ष गन्धर्व राक्षसाः।
ब्रह्म राक्षस बेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ।।९५।।
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्।।९६।।

भावार्थ– इस पृथ्वी पर मारण, मोहन आदि जितने अभिचारक प्रयोग होते हैं, तथा इस प्रकार के जितने मन्त्र तन्त्र होते हैं वे सब इस कवच को हृदय में धारण कर लेने पर मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं। वे ही नहीं पृथ्वी पर विचरने वाले, ग्राम देवता आकाशचारी देव विशेष जलके सम्बन्ध से प्रगट होने वाले गण, उपदेश मात्र से सिद्ध होने वाले निम्न कोटि के देवता, अपने जन्म से प्रकट होने वाले देवता, कुल देवता माला

(कण्ठमाला आदि) डाकिनी शाकिनी अन्तरिक्ष में विचरने वाली अन्यन्त बलशाली भयानक डाकिनियां, गह, भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्माण्डा और भैरव आदि अनिष्ट कारक देवता भी हृदय में कवच धारण किये हुए रहने पर उस मनुष्य को देखते ही भाग जाते हैं। कवचधारी पुरूष को राजा से सम्मान वृद्धि प्राप्त होती है। यह कवच मनुष्य के तेज की वृद्धि करने वाला और उत्तम है।। ९३-९४-९५-९६।।

यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले।
जपे नाथ कथा सिद्धं कृत्वा तु कवचं पुरा।।९७।।
यामवद्भूमण्डलं धत्ते सशैल वन काननम्।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्र पौत्रिकी ।।९८।।
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।
प्राप्नोति पुरूषो नित्यं महायोगी गोरक्षं तु।।९९।।
लभतेपरम रूपंशिवे गोरक्षेन सह मोदते।।ॐ।।।१००।।

इति नाथ विलास विरचिता
"श्री नाथ सिद्ध कवचम्" सम्पूर्णम्।।

भावार्थ- इस श्री नाथ सिद्ध कवच का पाठ करने वाला पुरूष अपने कीर्ति से विभूषित भूतल पर अपने सुयश के साथ-साथ वृद्धि को प्राप्त होता है।। ९७।। जो प्रथम कवच का पाठ करके उसके बाद श्री नाथ सिद्ध कथा का पाठ करता है। उसकी जब तक वन, पर्वत और काननो सहित यह पृथ्वी टिकी रहती है तब तक यहां पुत्र, पौत्र (शिष्य -भक्त-सेवक) आदि संतान परम्परा बनी रहती है।। ९८।। देह का अन्त होने पर महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी के प्रसाद से उस नित्य परम् पद को प्राप्त होता है जो

देवताओं के लिए भी दुर्लभ है।। ९९।। वह सुन्दर दिव्य रूद्र धारण करता है और कल्याणमय शिव गोरक्ष के साथ आनन्द का भागी होता है।।१००।।

इस प्रकार योगी विलासनाथ विरचित **"श्री नाथ कवचम्"** पूर्ण हुआ।

अतः आपको गुरू गोरक्षनाथ जी के सूक्तम् का पाठ करना चाहिये।

अर्थात **"श्री गोरक्ष सूक्तम्"** का पाठ पढ़ते समय प्रत्येक श्लोक कहने के उपरान्त अक्षत (चावल) या सफेद पुष्प चढ़ाना चाहिये।

६- श्री गोरक्ष सूक्तम्

नमो गोरक्ष देवाय शिव रूपाय ते नमः।
नमः मत्स्येन्द्रशिष्याय, गोरक्ष सततं नमः।।१।।
भालचन्द्रधराय लोकहिताय ते नमः।
योगमार्ग प्रचाराय गोरक्ष सततं नमः।।२।।
गले रूद्राक्षधराय शिव रूप ते नमः।
भक्त प्रियाय देवाय, गोरक्ष सततं नमः।।३।।
नमो ज्योतिषरूपाय शक्ति रूपाय ते नमः।
अनेक रूपरूपाय, गोरक्ष सततं नमः।।४।।
हरिद्वारोत्तरे भागे गोरक्ष भगवान् जतिः।
अनेकजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यन्ति ।।५।।

श्री गोरक्ष सूक्त (स्तुती)

भावार्थ- श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी को मेरा नमस्कार है श्री गोरक्ष शिव रूपी को नमस्कार है। माया स्वरूपी दादा मत्स्येनद्रनाथ जी के जो शिष्य है उन्हें मैं बारंबार नमस्कार करता हूँ ।। १।। भाल ऊपर चन्द्र को धारण करने वालें, सर्व लोकों का हित करने वाले उन गुरू गोरक्षनाथ जी को मैं नमस्कार करता हूँ। ऐसे योग मार्ग के महाप्रचारक गुरू गोरक्षनाथ जी को मैं सतत बारंबार नमस्कार करता हूँ।। २।। गले में रूद्राक्ष मालायें धारण करने वाले ऐसे शिव स्वरूपी गुरू गोरक्षनाथ जी को नमस्कार करता हूँ। ऐसे भक्तों के अत्यंत प्रिय देवता भक्तवत्सल गुरू गोरक्षनाथ जी को मैं बारंबार नमस्कार करता हूँ ।। ३।। जो ज्योतिष रूपी तथा शक्ति रूपी भगवान गोरक्षनाथजी को मै नमस्कार करता हूँ। अनन्त अनेकों रूप को धारण करने वाले अनन्त योगी गुरू गोरक्षनाथ जी को बारंबार नमस्कार करता हूँ।। ४।। जो पुण्य भूमि हरिद्वार के उत्तर भाग में भगवान् जती गोरक्ष नाम से विराजमान हैं एवं जिनका केवल नामस्मरण करने मात्र से अनेक जन्म जन्मों में किये हुए पाप नष्ट हो जाते हैं।। ५।।

नमो ज्योतिः स्वरूपाय, शिवस्य ध्यान तत्परः।
गोरक्ष जति देवाय, आदेश इति कीर्तितः ।।६।।
महासिद्धो महायोगी, महाधीरो महायति।
महाज्ञानी च देवाय आदेश इति कीर्तितः।।७।।
ज्ञान योगीन्द्र देवाय, योगेश्वराय नमो नमः।
नमः सिद्धस्य हिताय, आदेश इति कीर्तितः।।८।।
यज्ञनाथो यज्ञ रूपः गोरक्ष भगवान् जतिः।
सदाचारी जटाधरी आदेश इति कीर्तितः।।९।।
ब्रह्मचारी ज्ञान धारी गोरक्ष परमात्मने ।
नमो आदेश गोरक्षाय पुनः आदेश कीर्तितः।।१०।।

भावार्थ– हे गोरक्षनाथ जी आप ज्योति स्वरूपी एवं शंकर भगवान के ध्यान में सदा तत्पर रहने वाले, आप सम्पूर्ण जति गोरक्ष भगवान को मैं नमस्कार करके आदेश करता हूँ।। ६।। हे परम योगी गुरू गोरक्षनाथ जी आप सिद्धों में महासिद्ध योगियों में महायोगी तथा धीरजियों में महाधीरों, यतियों में महायती एवं ज्ञानियों में महाज्ञानी ऐसे देवता स्वरूप को मैं आदेश करता हूँ ।। ७।। हे परमज्ञानी गुरू गोरक्षनाथ जी आप ज्ञान-योगियों के इन्द्र तथा महान योगेश्वर आपको मेरा नमस्कार है, आप सिद्ध योगियों के हित करने वाले आपको सआदेश नमस्कार करता हूँ।। ८।। हे गोरक्षनाथ आप यज्ञों के नाथ तथा यज्ञरूपी पुरूष हैं ऐसे सदाचारी और जटाधारी भगवान जती गोरक्षनाथजी को मैं आदेश करता हूँ।। ९।। हे परम आत्मा में रमने वाले, ब्रह्मचारी तथा ज्ञान को धारण करने वाले शम्भुजती परमात्मन गुरू गोरक्षनाथ जी आपको आदेश नमस्कार करता हूँ। पुनः पुनः आदेश करता हूँ।। १०।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु शिवमायेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश नमो नमः।।११।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।। १२।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु ब्रह्ममायेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।१३।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु रूद्ररूपेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः ।। १४।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।। १५।।

भावार्थ– हे गुरू गोरक्षनाथ जो सभी प्राणियों में शिवमाया के नाम से जाने जाते हैं आपको मैं सादर आदेश करता हूँ । बारंबार सआदेश नमस्कार करता हूँ ।। ११।। हे जती गोरक्षनाथ जी जो सभी प्राणियों में विष्णुमाया के नाम से जाने जाते हैं, आपको मैं आदेश करता हूँ। त्रिवार आदेश, नमस्कार करता हूँ।। १२।। हे शिव गोरक्ष आप सभी प्राणियों में ब्रह्ममाया के नाम से जाने जाते हैं। आपको मैं त्रिवार आदेश करता हूँ। बारंबार नमस्कार आदेश करता हूँ।। १३।। हे योगी गोरक्षनाथजी जो सभी प्राणियों में रूद्र स्वरूप से जाने जाते हैं आपको मैं आदेश करता हूँ । बारंबार नमस्कार आदेश करता हूँ।। १४।। हे जती सती गुरू गोरक्षनाथ जी आप सर्व प्राणियों में शक्ति रूप मे स्थित हैं। आपको मैं नमस्कार आदेश करता हूँ। बारंबार आदेश करता हूँ।। १५।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु सत्यरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।१६।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु गुरुरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।१७।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु पितरौ रूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।१८।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु सखा रूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।१९।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु वंशरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।20

भावार्थ– हे सतगुरू गोरक्षनाथ जी सभी प्राणियों में आप सत्यरूप से स्थित हैं। आपको आदेश करता हूँ । बारंबार आदेश, नमस्कार करता हूँ ।। १६ ।। हे जगतगुरू गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में सतगुरू रूप में स्थित हैं। आपको त्रिवार वन्दनादेश करता हूँ। बारंबार सआदेश नमस्कार करता हूँ।। १७।। हे शिव गोरक्ष आप सभी प्राणियों में पितरौ (मातृ-पितृ) रूप में स्थित हैं। आपको मैं नमन पूर्वक आदेश करता हूँ । अनंत नमस्कार आदेश करता हूँ ।। १८ ।। हे अनन्त रूपी गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में सखा रूप में स्थित हैं। आपको मैं नमन पूर्वक आदेश करता हूँ, बारंबार सआदेश नमस्कार करता हूँ।। १९ ।। हे महाबिन्दु जती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में वंश रूप में विराजमान हैं, स्थित हैं, आपको सादर आदेश करता हूं । अनेक बार आदेश नमस्कार करता हूँ।। २०।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु आत्मरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।२१।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।२२।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु मनरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।२३।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।२४।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु वाणीरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।२५।।

भावार्थ– हे आत्मानंद गुरू गोरक्षनाथ जी जो कि आप सभी प्राणियों में आत्मारूप से (अधिष्ठित) स्थित है, आपको मैं सहृदय आदेश करता हूँ। बारंबार नमन पूर्वक आदेश करता हूँ।। २१।। हे चैतन्य प्रभु गुरू गोरक्षनाथ जी जो कि आप सभी प्राणियों में चेतना रूप कहलाते हैं। आपको सतचित्त आदेश करता हूँ। अनेक बार सआदेश नमस्कार करता हूँ।। २२।। ह राजयोगी गुरू गोरक्षनाथजी जो कि आप सभी प्राणियों में मन रूप से स्थित हैं। आपको मेरा आदेश हैं। त्रिवार वन्दन आदेश है।। २३।। हे बुद्धिराज गुरू गोरक्षनाथजी जो कि आप सभी प्राणियों में बुद्धि रूप से स्थित हैं। आपको मैं नमनपूर्वक आदेश करता हूँ। बारंबार सआदेश करता हूँ ।। २४।। हे नाद योगी गुरू गोरक्षनाथ जी जो कि आप सभी प्राणियों में वाणी रूप से विराजमान हैं। आपको मै आदेश करता हूँ। बारंबार नमस्कार, आदेश करता हूँ।। २५।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु योगरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।२६।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु चित्तरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।२७।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु निरोधरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।२८।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु सदा जपा रूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।२९।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु नाद (अनहद) रूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।३०।।

भावार्थ– हे महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में योग रूप से स्थित हैं। आपको मेरा आदेश है। त्रिवार वन्दन आदेश है।। २६।। हे चित्तेश्वर गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में चित्त रूप में स्थित हैं आपको मेरा नमस्कार आदेश है। आपको बारंबार सआदेश नमस्कार है।। २७।। हे जती गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में निरोध (शून्य) रूप से स्थित हैं। आपको मेरा नमस्कार है। बारंबार नमो आदेश है।। २८।। हे गुरू गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में जपा अजपा (ॐ,सोहं) जाप के रूप में विद्यमान हैं। आपको मेरा नमः आदेश है। तीन बार आदेश है।। २९।। हे नादब्रह्मा गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में अनहद नाद रूप में विद्यमान हैं। आपको मेरा नमस्कार है। बारंबार आदेश, नमस्कार है।। ३०।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु ध्यानरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।३१।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु ज्ञानरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।३२।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु त्याग–वैराग्यरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।३३।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु तपस्यारूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।३४।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु यज्ञरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।३५।।

भावार्थ– हे महाध्यानी गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में ध्यान रूप में स्थित हैं, विद्यमान हैं। आपको मेरा नमस्कार है, मैं त्रिवार नमस्कार, आदेश करता हूँ।। ३१ ।। हे महाज्ञानी जती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में ज्ञान रूप में विद्यमान हो, स्थित हो । आपको मेरा आदेश है। बारंबार नमन पूर्वक आदेश है।। ३२ ।। हे महात्यागी गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में त्याग तथा वैराग्य रूप में स्थित हैं। आपको मेरा नमस्कार है। बारंबार नमस्कार पूर्वक आदेश हैं। ।। ३३ ।। हे तपोधिन जती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में तपस्या रूप में स्थित हैं, विद्यमान हैं, आपको मेरा आदेश है, बारंबार नमो आदेश है।। ३४ ।। हे जती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में यज्ञ (धूना) रूप में स्थित हैं आपको मेरा नमस्कार है। बारंबार नमस्कार करके आदेश करता हूँ।। ३५ ।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु प्रकाशात्मेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।३६।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु पर ब्रह्मायेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।३७।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु मृत्युंजयेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।३८।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु परमतत्वरूपेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।३९।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु मोक्ष मुक्तिश्च शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।४०।।

भावार्थ– हे प्रकाश पुरूष गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में प्रकाशपुञ्ज नाम से कहे जाते हैं। आपको त्रिवार नमस्कार करके आदेश करता हूँ । बारंबार नमन पूर्वक आदेश करता हूँ।। ३६ ।। हे परब्रह्मा गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में परब्रह्ममाया के नाम से जाने जाते हैं। आपको नमन

पूर्वक आदेश करता हूँ। बारंबार नमस्कार करके आदेश करता हूँ।। ३७।। हे जती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में मृत्यु के ऊपर विजय पाने वाले मृत्युंजय नाम से कहे जाते हैं। आपको आदेश कर नमन करता हूँ। त्रिवार नमन पूर्वक आदेश करता हूँ।। ३८।। हे परमगुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में परमृतत्व के नाम से जाने जाते हैं। आपको मेरा नमस्कार है। बारंबार नमन पूर्वक आदेश है।। ३९।। हे मोक्षदाई जती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में प्रत्यक्ष मोक्ष एवं मुक्ति नाम से कहे जाते हैं। आपको त्रिवार नमस्कार पूर्वक आदेश करता हूँ। बारंबार नमन पूर्वक आदेश करता हूँ।। ४०।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु ऋद्धि-सिद्धिरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।४१।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु (तंत्र) मंत्ररूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।४२।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।४३।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु भक्तिरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।४४।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु मायारूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।४५।।

भावार्थ- हे सिद्ध योगी गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में ऋद्धि, सिद्धि रूप में स्थित हैं। आपको त्रिवार नमन कर आदेश करता हूँ। बारंबार नमस्कार करके आदेश करता हूँ।। ४१।। हे महामांत्रिक योगी गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में तंत्र और मंत्र रूप में स्थित हैं। आपको त्रिवार नमः आदेश करता हूँ। आपको सआदेश, नमस्कार है।। ४२।। हे महाशक्तिशाली गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में शक्ति रूप में स्थित हैं, विराजमान हैं। आपको नमस्कार करके आदेश करता हूँ। बारंबार नमस्कार पूर्वक

आदेश करता हूँ।। ४३।। हे भक्त श्रेष्ठ गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में भक्ति रूप में स्थित हैं, विद्यमान हैं। आपको मेरा त्रिवार नमन पूर्वक आदेश है बारंबार नमस्कार है।। ४४।। हे महामाया जती गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में माया रूप में विद्यमान हैं, स्थित है। आपको मेरा नमस्कार है आदेश है। बारंबार नमन पूर्वक आदेश है।। ४५।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।४६।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु पुष्टिरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।४७।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।४८।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।४९।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।५०।।

भावार्थ– हे जती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में तुष्टी रूप में स्थित हैं। आपको त्रिवार नमन पूर्वक आदेश है। बारंबार नमस्कार करके आदेश करता हूँ।।४६।। हे शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में पुष्टि रूप में विद्यमान हैं स्थित हैं। आपको मेरा नमन कर आदेश है। बारंबार सआदेश, नमस्कार करता हूँ।। ४७।। हे महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में क्षान्ति रूप में स्थित हैं। आपको नमस्कार है आदेश है। बारंबार नमस्कार, आदेश है।। ४८।। हे शाश्वत शान्ति दाता, गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में शान्ति रूप में विराजमान हैं, स्थित हैं। आपको नमन पूर्वक आदेश है। बारंबार नमन पूर्वक आदेश है ।। ४९।। हे प्राणप्रिय गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में श्रद्धा रूप

में विद्यमान हैं। स्थित हैं, आपको मेरा नमस्कार, आदेश है। त्रिवार वन्दनात्मक आदेश करता हूँ।। ५०।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु परमायारूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।५१।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।५२।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु कायारूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।५३।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु प्रेमात्मारूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।५४।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु जीवात्मारूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।५५।।

भावार्थ– हे परमयोगी गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में माया के परे स्थित हैं, विद्यमान हैं। आपको नमस्कार कर आदेश करता हूँ। बारंबार नमन पूर्वक आदेश करता हूँ।। ५१।। हे दयाधिन जती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में दया रूप में स्थित हैं। आपको मेरा नमस्कार है। बारंबार नमन पूर्वक आदेश करता हूँ।। ५२।। हे महाकाय गुरू गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में काया रूप में स्थित है आपको मेरा नमस्कार है। बारंबार नमन पूर्वक आदेश है।। ५३।। हे प्रेमप्रिय परमात्मा गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में प्रेमात्मा रूप में स्थित हैं। विराजित हैं। आपको मेरा नमस्कार है। बारंबार नमन पूर्वक आदेश है।। ५४।। हे जीवों

के कल्याणकारी गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में जीवात्मा रूप में स्थित हैं। आपको प्रणाम कर आदेश करता हूँ। बारंबार नमस्कृत आदेश करता हूँ।। ५५।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु सन्तोषानन्द शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।५६।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु कल्पपादप शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।५७।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु धर्मरूपेण शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।५८।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु क्षेत्रपालेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।५९।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु कर्मरूपेण शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।६०।।

भावार्थ– हे ब्रह्मानन्दी जती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में सन्तोषानन्द नाम से अर्थात् सन्तोष एवं आनन्द नाम से कहे जाते हैं। आपको त्रिवार आदेश करके नमस्कार करता हूँ, बारंबार नमन पूर्वक आदेश करता हूँ ।। ५६।। हे इच्छादानी गुरू गोरक्षनाथ जी ! आप सभी प्राणियों में कल्पवृक्ष नाम से जाने जाते हो, आपको मैं नमन पूर्वक आदेश करता हूँ। पुनः पुनः नमन कर नमस्कार करता हूँ।। ५७।। हे जती गोरक्षनाथजी हे धर्म के अधिकारी आप सभी प्राणियों में धर्म नाम से जाने जाते हो आपको मैं नमस्कार करता हूँ। आदेश करता हूँ । बारंबार नमस्कार करके आदेश करता हूँ।। ५८।। हे प्राणियों के रक्षक गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी

प्राणियों में क्षेत्रपाल नाम से जाने जाते हो, आपको मेरा सनमन आदेश है बारंबार आदेश नमस्कार है ।। ५९ ।। हे कर्मयोगी जती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में कर्म नाम से कहे जाते हो,आपको मैं नमस्कार करता हूँ आदेश करता हूँ। बारंबार नमन पूर्वक आदेश करता हूँ।।६०।।

यः गोरक्ष सर्वभूतेषु गुणरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।६१।।
यः गोरक्ष सर्वभूतेषु जयरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।६२।।
यः गोरक्ष सर्वभूतेषु (सुख-दुःखादि) भोगरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।६३।।
यः गोरक्ष सर्वभूतेषु दंडरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।६४।।
यः गोरक्ष सर्वभूतेषु (शुभ) लाभदीरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।६५।।

भावार्थ– हे गुणज्ञानी गुरू गोरक्षनाथ जी ! आप सभी प्राणियों में गुण रूप से विद्यमान हैं। आपको मेरा आदेश, नमस्कार है। बारंबार आदेश, नमस्कार है ।। ६१ ।। हे जती गोरक्षनाथजी, आप सभो प्राणियों में जय रूप से स्थित हैं। आपको मैं नमन पूर्वक आदेश करता हूँ, बारंबार आदेश प्रणाम करता हूँ।। ६२ ।। हे शिवजती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में सुख:दु:खादि भोगों के रूप में विद्यमान हैं। आपको मेरा त्रिवार वन्दनीय आदेश है। बारंबार नमन पूर्वक आदेश करता हूँ।। ६३ ।। हे शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में दण्ड रूप से विद्यमान हैं, प्रतिष्ठित हैं।

आपको मेरा नमस्कार एवं आदेश है। बारंबार आदेश, नमस्कार करता हूँ ।। ६४ ।। हे महाजती गुरू गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में शुभ एवं लाभ रूप में विद्यमान हो, स्थित हो । आपको मेरा त्रिवार वन्दनीय आदेश है। बारंबार नमन पूर्वक आदेश है।। ६५ ।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु (महा) सत्त्वरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।६६।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु दमनरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।६७।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु (सृष्टि)कर्तारूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।६८।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु (सृष्टि) धर्तारूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।६९।।
यः गोरक्ष सर्वभूतेषु (सृष्टि) प्रलयरूपेण संस्थितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।७०।।

भावार्थ– हे जती गोरक्षनाथ जी आप सर्व प्राणि मात्र में महाबलवान् रूप में विद्यमान हैं। आपको मेरा नमन पूर्वक आदेश है। बारंबार आदेश हैं।। ६६ ।। हे गुरू गोरक्ष नाथ जी आप सभी प्राणियों में दमन करने वाले रूप में स्थित हैं। आपको मेरा नमस्कार, आदेश है। बारंबार नमस्कार, आदेश हैं।। ६७ ।। हे शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में सृष्टिकर्ता रूप में विद्यमान है।। आपको मेरा नमन सआदेश है। बारंबार नमस्कार, आदेश है।। ६८ ।। हे जतीसती गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में सृष्टिधर्ता रूप में स्थित हैं। आपको मेरा नमस्कार है, बारंबार आदेश नमस्कार है।। ६९ ।। हे महाकाल गुरू गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में सृष्टि प्रलयकारक रूप में स्थित हैं। आपको मैं नमस्कार, आदेश करता हूँ। बारंबार आदेश, नमस्कार करता हूँ।। ७० ।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु भुवनेश्वर मायेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।७१।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु भूतनाथ मायेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।७२।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु गोपालक मायेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।७३।।
यः गोरक्षः सर्वभुतेषु सिद्धनाथ मायेती शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।७४।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु महायती रूपेण शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।७५।।

भावार्थ– हे गुरू गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में चतुर्दश भुवन के ईश्वर नाम से कहे जाते हैं। आपको मेरा आदेश है बारंबार नमन पूर्वक आदेश है।। ७१।। हे जती गुरू गोरक्ष्नाथजी आप सभी प्राणियों में भूतों के नाथ नाम से कहे जाते हो आपको मैं नमन, आदेश करता हूँ। बारंबार नमन पूर्वक आदेश करता हूँ।। ७२।। हे शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथजी आप सभो प्राणियों में सिद्धनाथ नाम से जाने जाते हो, आपको मेरा नमन पूर्वक आदेश है, त्रिवार वन्दन, आदेश करता हूँ।। ७४।। हे जती सती गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में महायती नाम से जाने जाते हो । आपको मैं आदेश प्रणाम करता हूँ। बारंबार आदेश, नमस्कार करता हूँ।। ७५।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु विद्यानन्देति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।७६।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु ज्ञानानन्देति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।७७।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु ध्यानानन्देति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।७८।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु आत्मानन्देति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।७९।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु चित्तानन्देति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।८०।।

भावार्थ– हे महाजती गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में विद्यानन्द नाम से जाने जाते हो । आपको मैं नमन पूर्वक आदेश करता हूँ। बारंबार नमस्कार पूर्वक आदेश करता हूँ।। ७६ ।। हे महाज्ञानी गुरू गोररक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में ज्ञानानन्द (ज्ञान में आनन्द लेने वाले) नाम से जाने जाते हो । आपको मेरा नमन पुर्वक आदेश है बारंबार आदेश, नमस्कार करता हूँ। ७७।। हे महाध्यानी गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में ध्यानानन्द (ध्यान में आनंद लेने वाले) नाम से जाने जाते हो । आपको मेरा नमन पूर्वक आदेश है! और बारंबार नमस्कार है ।। ७८।। हे आत्मस्वरूपी गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में आत्मानन्द (आत्मा में आनंद लेने वाले) नाम से जाने जाते हो । आपको मेरा नमस्कार पूर्वक आदेश है। त्रिवार वन्दनीय आदेश है।। ७९।। हे शम्भुजती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में चित्तानन्द (चित्त में आनन्द लेने वाले) नाम से जाने जाते हो। आपको मेरा सनमन आदेश है बारंबार आदेश, नमस्कार हैं।। ८०।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु वेदान्त-पारग शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।८१।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु वेदवन्द्योयौति(मायेति) शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।८२।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु हिरण्यरेता (मायेति) शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।८३।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु हयग्रीवी (मायेति) शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।८४।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु हिरण्यमयः शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।८५।।

भावार्थ– हे ज्ञानयोगी गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में वेदान्त पारग (वेदान्त के भी पार जाने वाले) वेदान्त पारग नाम से जाने जाते हो। आपको मेरा नमन पूर्वक आदेश है। बारंबार नमन पूर्वक आदेश है।। ८१।। हे महाज्ञानी जती गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में वेदवन्द्यो नाम से जाने जाते हो । आपको त्रिवार वन्दन आदेश है। बारंबार वन्दनीय आदेश है ।। ८२।। हे महाजती गुरू गोरक्षनाथजी आप सभो प्राणियों में हिरण्यरेता नाम से प्रचलित हैं। आपको मेरा नमन पूर्वक आदेश है। बारंबार नमन पूर्वक आदेश है।। ८३।। हे महामन गुरू गोरक्षनाथ जी आप सभी प्राणियों में हयग्रीव (हयग्रीव के अवतारी) नाम से जाने जाते हो। आपको मेरा आदेश, नमस्कार है। बारंबार नमन पूर्वक आदेश करता हूं।। ८४।। हे यती गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में हिरण्यमय (सुवर्णमय शरीर धारण करने वाले) नाम से कहे जाते हो । आपको मेरा त्रिवार वन्दन है, आदेश है । बारंबार नमस्कार है आदेश है।। ८५।।

यः गोरक्षः सर्वभूतेषु गुणसम्पन्न शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।८६।।
यः गोरक्षः सर्वभुतेषु गुणानन्दितमानसः शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।८७।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु तन्त्र, मन्त्र फलप्रदा शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।८८।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु सर्वात्मक मायेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।८९।।
यः गोरक्षः सर्वभूतेषु शमी मायेति शब्दितः।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश। नमो नमः।।९०।।

भावार्थ– हे महागुणी गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में (गुणों से युक्त) गुणसम्पन्न नाम से कहे जाते हो । आपको मेरा नमन पूर्वक आदेश है। आपको बारंबार नमस्कार है।। ८६।। हे गुणज्ञानी गुरू गोरक्षनाथजी

आप सभी प्राणियों में (अपने गुणों से लोगों को आनंदित करने वाले) गुणानन्दितमानसः नाम से जाने जाते हो । आपको मेरा त्रिवार वन्दन आदेश है आपको बारंबार वन्दनीय आदेश करता हूं।। ८७।। हे महातांत्रिक एवं मांत्रिक गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में (तन्त्र, मन्त्रादि का फल देने वाले) तन्त्र-मन्त्र फलदायक नाम से जाने जाते हो। आपको मैं नमन पूर्वक आदेश करता हूँ, बारंबार आदेश प्रणाम करता हूँ।। ८८।। हे महाव्यापक गुरू गोरक्षनाथजी आप सभी प्राणियों में (सर्वमय) सर्वात्मक नाम से जाने जाते हो। आपको मैं सआदेश, नमस्कार करता हूँ। बारंबार सआदेश, नमस्कार करता हूँ।। ८९ ।। हे गा गुरू गोरक्षनाथजी आप सभो प्राणियों में (इन्द्रियों का शमन करने वाले) शमी नाम से जाने जाते हो । आपको मैं नमन पूर्वक आदेश करता हूँ। बारंबार नमन पूर्वक आदेश करता हूँ।। ९०।।

नमो योगी महायोगी शिवाय सततं नमः।
नमः प्रकृतयः भद्राय नियताः प्रगणता स्मृतंम।।९१।।
रूद्राय नमो नित्याय नमो गार्याय धात्रणे।
ज्योत्स्नाय चेन्दुरूपाय सुखाय सततं नमः।।९२।।
कल्याणकारीरूपाय सिद्ध योगीं नमो नमः।
नैऋत्य भूभृता देवा सर्वाय ते नमो नमः९३।।
गोरक्ष शिव रूपाय योगमार्गप्रचारकः।
सर्वेसारभूता देवा धूम्ररूपाय ते नमः।।९४।।
अत्यंतसौम्यरूपाय, गोरक्षाय नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठाय महाजती नमो नमः।।९५।।

भावार्थ– महायोगी को नमस्कार है। योगी (गुरू गोरक्षनाथजी) शिव को सदा सर्वदा नमस्कार है। प्रकृति एवं भद्र को प्रणाम है। हम लोग नियमपूर्वक (शिवरूपी गुरू गोरक्षनाथजी को) नमस्कार करते हैं।। ९१।। रूद्र को नमस्कार है। नित्य गार्य एवं धात्र को बारंबार नमस्कार है।

ज्योत्स्नामय चन्द्र रूप एवं सुखस्वरूप योगी (गोरक्षनाथजी को) सतत प्रणाम, नमस्कार हैं।। ९२।। (शरणागतों का) कल्याण करने वाले सिद्धि रूपी योगी को (गुरू गोरक्षनाथजी को) हम बारंबार नमस्कार करते हैं। नैऋत्य अर्थात् राक्षसों के तथा राजाओं के देवता आप सर्वास्वरूपा आपको बारंबार नमस्कार करता हूँ।। ९३।।योग मार्ग के प्रचारक प्रत्यक्ष शिव के स्वरूप जो सर्व भूतों के देवता ऐसे धुम्रदेव को सर्वदा नमस्कार करता हूँ।। ९४।। हे जती गुरू गोरक्षनाथजी जो अत्यंत सौम्य रूप है उनको मैं बारंबार नमस्कार करता हूँ प्रणाम करता हूँ। सम्पूर्ण जगत् के आधारभूत महाजती को (गुरू गोरक्षनाथ जी को) बारंबार नमस्कार करता हूँ।। ९५।।

इन्द्रियाणामधिष्ठात्रा भूतानां चाखिलेषु यः।
भूतेषु सततं व्याप्तयोगिने तं नमो नमः।।९६।।
चित्तिरूपेण यः कृत्स्नं एवं व्याप्य स्थितो जगत्।
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश नमो नमः।।९७।।
इदं सूक्तम् जपेन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्चते।
धन पुत्राँस्तथा दारान् लभते नात्र संशयः।।९८।।
मनसा कर्मणा वाचा सूक्तम् यः पठेत् नरः।
जन्म जन्म कृतं पापं नाशमायाति सत्वरम्।।९९।।
इदंगोरक्षसूक्तम्पठित्वा तुसम्पूजितः पुष्पैधूर्पगन्धादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिधर्मगति शुभम् ।।१००।।
यः जती गोरक्षसूक्तम् नाथ विलास निर्मितम्।
जपन्ते भक्ति-भावेन मोक्ष-मुक्तिं साद्यः ते लभन्ते ।।१०१।।

"इति श्री गोरक्ष सूक्तम् सम्पूर्णम्"

भावार्थ- जो जीवों के इन्द्रिय वर्ग का अधिष्ठान देवता एवं सब प्राणियों में सदा व्याप्त रहने वाले हैं उन व्याप्त योगी को बारंबार नमस्कार है ।। ९६।। जो योगी (गुरू गोरक्षनाथजी) इस सम्पूर्ण जगत को व्याप्त करके स्थित हैं उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है।। ९७।। इस प्रकार

श्री गोरक्ष सूक्तम् का नित्य जप करने पर सर्व प्रकार के पापों का नाश होता है तथा धन सम्पदा, पत्नी, सन्तान का लाभ होता है, इसमें संशय ही नहीं है।। ९८।। मन अन्त:करण से कर्म तथा वाचा द्वारा इस सूक्तम् का पाठ जो नर (मनुष्य) करता है, जन्म-जन्मांतर के किये हुए पापों का शीघ्र ही नाश होता है।। ९९।। इस गोरक्ष सूक्तम् का पाठ करके पुष्प धूप और गंध आदि से पूजन करके उनकी स्तुति करने पर वे, धन, पुत्र, धार्मिक बुद्धि तथा उत्तम गति प्रदान करते हैं ।। १००।। इस प्रकार योगी विलासनाथ जी द्वारा रचित जती गोरक्षनाथजी के इस सूक्तम् का भक्ति-भाव से जो जप करेगा वह मोक्ष-मुक्ति से लाभान्वित होगा ।। १०१।।

इस प्रकार **"श्री गोरक्ष सूक्तम्"** पूर्ण हुआ।

७- प्रसाद भोग विधि

अत: अपने इष्ट अर्थात् गुरू गोरक्षनाथ जी को मिष्ठान भोग लगावें।

शनिवार या रविवार को	:	कच्चा या पक्का रोट।
सोमवार और गुरूवार	:	मिष्ठान या खिचड़ी ।
मंगलवार	:	लाल बून्दी या मिश्री, गौ का दूध
बुधवार या शुक्रवार	:	फल
(विशेष फल	:	बिल्वफल, गुलर का फल)
मकर संक्रान्ति	:	खिच्चड़
गुरू पूर्णिमा	:	मूंगदाल के बडे, मेवा अगर कुछ

नहीं भोग लगा सकें तो गौ का कच्चा दूध व मिश्री का भोग लगावें। और ताम्बुल् लौंग इलायची इ० प्रदान करे अत: आपको आरती करनी चाहिये।

सुबह प्रात: गुरू गोरक्ष आरती (छोटी) तथा शामको संध्या: गुरू गोरक्षनाथजी की आरती (बड़ी) करे। फिर कर्पूर जलाकर सुवास करें, प्रार्थना बोले, नमस्कार, आदेश करें। अंत में प्रसाद सभी को बांट देवें।

८- गुरू गोरक्ष आरती (प्रातः)

जय देव, जय देव, जय गोरक्ष योगीऽऽ शिव गोरक्ष योगी
दर्शन मात्र मनोकामना पूर्ती । जय देव जय देवऽऽ

सुखकर्ता दुःखहर्ता तुम हो अंतर्यामी...तुम हो अंतर्यामीऽऽऽ
अखण्ड-अनन्त प्रेम कृपा हो तुम्हरी...प्रेम कृपा हो तुम्हरीऽऽऽ
सर्वांग सुन्दर कर्पूर कान्ति.... कर्पूर कान्तिऽऽऽ
कण्ठी झलके माला नाद रूद्राक्ष की
जय देव, जय देव, जय गोरक्ष योगीऽऽ शिव गोरक्ष योगी
दर्शन मात्र मनोकामना पूर्ती ....जय देव जय देवऽऽ ।। १।।

चन्द्र -सूरज जैसे कुण्डल है काना... कुण्डल है कानाऽऽऽ
चन्दन भस्मी तिलक लागे हो माथा.. लागे हो माथाऽऽऽ
जटा जुटी में चन्द्र शोभे न्यारा... चन्द्र शोभे न्याराऽऽऽ
झोली झण्डी खर्पर लेकर है हाती
जय देव, जय देव, जय गोरक्ष योगीऽऽ शिव गोरक्ष योगी
दर्शन मात्र मनोकामना पूर्ती... जय देव जय देवऽऽ।। २।।

बाघम्बर आसन अन्तरमुख ध्याना.. अन्तरमुख ध्यानाऽऽऽऽ
सहज योग त्रिनेत्र त्रिकाल ज्ञाना... त्रिकाल ज्ञानाऽऽऽऽ
नाथ योगीजनं करेगे सेवा... करेंगे सेवाऽऽऽऽ
संकटी रक्षेंगे सन्तोषी रखेंगे सुरमुनी वन्दना
जय देव, जय देव, जय गोरक्ष योगीऽऽ शिव गोरक्ष योगी
दर्शन मात्र मनोकामना पूर्ती... जय देव जय देवऽऽ।। ३।।

उपरोक्त आरती प्रातः विधि के उपरान्त करें।

९- आरती गुरू गोरक्षनाथ जी की (संध्या)

गुरू हमारे गोरक्षनाथ सदगुरू कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।

मृगछाला, बाघाम्बर आसन दिया बिछाय।
चन्द्र सूरज कानन कुण्डल, तारे तेज समान।।
भस्मी रमाये जटा जमाये, मस्तक चन्द्रभान।
नाद जनेऊ त्रिशूल डमरू सांभ शिव अवतार।।
गुरू हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरू कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।। १।।

तिन लोचन त्रिपुण्ड भस्म तिलक करे हनुमान।
धूनी चेताये धूनी रमाये निरञ्जन निराकार।।
चिमटा खम्पर हाथ लियो सद्गुरूजी का ध्यान।
त्रिलोक की अलख जतावे ऋद्धि सिद्धि भण्डार।।।
गुरू हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरू कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।। २।।

रक्त रूप में भगवा बाना, शक्ति उमा की भेंट।
अवधू जोगी त्याग बैरागी झोली भगवा भेष।।
अन्नपूर्णा भोग लगावे सुख सन्तोष की सेज।
रोट लंगोटी भेंट चढ़ावे, भैरव करी आदेश।।
गुरू हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरू कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।। ३।।

ब्रह्मा विष्णु करे आरती, शिव गोरख का मान।
नारद इन्द्र चँवर घुमायें सुरनर करी गुणगान।।
जय सद्गुरू जय कृपालु, ज्योति स्वरूप का ध्यान।
जय प्रतिपाली जय अविनाशी झलके ब्रह्मज्ञान।।
गुरू हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरू कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।। ४।।

वेद पुराण ना गाये महिमा, विरला जाने वीर।
अलख निरञ्जन नाम लेते लख चौरासी में जीत।।
सिद्ध चौरासी और नवनाथ, सब सन्तन में प्रीत।
घट-घट समाये कण-कण रमाये अटल योगी की रीत।।
गुरू हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरू कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।। ५।।

शिष्य भर्तृहरि और गोपीचंद, का पद अजर अमर।
आधि व्याधि सभी मिटाई पूरनमल भय अमर।।
ऋषि मुनियों को योग दिया राम कृष्ण हनुमंत।
ज्वाला काली और दुर्गा जी, सब शक्ति करी नमन।।
गुरू हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरू कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश निमाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।। ६।।

हठ हठीले श्री गोरक्षनाथ, चार युगों का जोग।
नाद, बिन्द की गाँठ है, श्री नाथ निरञ्जन योग।।
बैठ बैठले नाम रटिले, परमानन्द का भोग।
अपने आपे आप में, पालो परम सन्तोष।।
गुरू हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरू कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।७।।

भूत प्रेत कलु कालका, सदगुरू करो विनाश।
सुख दुःख से सब पार कर दो मोक्ष मुक्ति के धाम।।
भक्ति पूजा शुभ आरती, करो आप स्वीकार।
जन्म जन्म के दास पर, कृपा करो भगवान।।
गुरू हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरू कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।८।।

निशदिन जो करे आरती मनवांछित फल पाये।
सुख सम्पति लाभ से जीवन सफल बनाये।।
नमन करूँ सब भक्तन को विनती करो स्वीकार।
यो वन्दन विलासनाथ गुरू आनंद का दास।।
गुरू हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरू कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।९।।

उपरोक्त आरती संध्या विधि के उपरान्त करें।

*****

१०- नाथ सम्प्रदाय की पारम्परिक प्रार्थना

"ॐ शिव गोरक्ष योगी"

गंगे हर नर्मदे हर जटा शंकरी हर ॐ नमो पार्वती पतये हर, बोलिये श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी महाराज की जय। माया स्वरूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी महाराज की जय। नवनाथ चौरासी सिद्धों की जय। भेष भगवान की जय। अटल क्षेत्र की जय। रमतेश्वर महाराज की जय। कदलीकाल भैरवनाथजी महाराज की जय। पात्र देवता भगवान की जय। ज्वाला महामाई की जय। सनातन धर्म की जय। अपने -अपने गुरू महाराज की जय। गौ ब्राह्मण की जय। बोल सांचे दरबार की जय। हर हर महादेव की जय । हरि ॐ।

कर्पूर गौरम् करूणावतारम्, संसारसारम् भुजगेन्द्रहारम।
सदा वसन्तम् हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितम् नमामि।।
मन्दारमाला कलिनाल कायै, कपाल मालांकित कन्थराय।
नमः शिवाय च नमः शिवाय, नमः शिवाय च नमः शिवाय।।

गोरक्ष बालम् गुरू शिष्य पालम्।
शेषां हिमालयम् शशिखण्ड भालम्।।
कालस्य कालम् जिनजन्म जालम्।
वन्दे जटालम् जगदब्जनालम्।।

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरूः देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात्परह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः।।
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्ति, पूजामूलं गुरूपदम।
मंत्रमूलं गुरूर्वाक्य, मोक्षमूलं गुरूकृपा।।
मन्त्र सत्यं पूजा सत्यं सत्यं देवनिरञ्जनम्।
गुरूवाक्यं सदा सत्यम् स्तयम् एकम् परम्पदम्।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धु श्च सखा त्वमेव।।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव।
त्वमेव सर्वम् मम देव देव।।

आकाषाय ताड़का लिंगम्, पाताले बटुकेश्वरम्।
मृत्युलोके महाकालम्, सर्वलिंगम् नमोस्तुते।।
शैली श्रृंगी शिरजटा झोली भगवा भेष।
कानन कुण्डल भस्म लसै शिवगोरक्ष आदेश।।

ॐकार तेरा आधार, तीन लोक में जयजयकार।
नाद बाजे काल भागे, ज्ञान की टोपी गोरख साजे।।
गलेनाद पुष्पन की माला। रक्षा करे श्री ।
शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी महाराज बाला।।

चार खाणी चार बाणी, चन्द्र सूर्य पवनपाणी।
एको देवा सर्वत्र सेवा, जोत पाट ले परसो देवा।
कानन कुण्डल गले नाद, करो सिद्धो नादोकार।
सिद्धों गुरूवरों को आदेश! आदेश!!

अलख-अलख

अतः नाथ योगी नादि आदेश करें। नाथ भक्त, सेवक गृहस्थ सभी ने नमस्कार करना चाहिये।

११- "ग्रन्थ-सारांश एवं विधि"

"श्री नाथ सिद्ध कवचम्" नामक ग्रंथ के सभी श्लोक मन्त्र के समान या मन्त्र रूप हैं अतः इनका श्रवण, मनन, पठन एवं जाप करने पर योगियों, साधकों, कर्मकाण्ड एवं शक्ति एवं नर-नारियों को सर्वोत्तम फल प्राप्ति होगी। यह ग्रन्थ इच्छाओं की पूर्ति करने वाला है, मानसिक एवं शारीरिक व्याधियों से मुक्ति प्रदान करने वाला तथा घर गृहस्थ, स्थान मकानों में समाधान, आनन्द एवं शान्ति देने वाला है।

इस अति उत्तम ग्रन्थ के

- "श्री गोरक्ष ध्यानम्"
- "श्री गोरक्ष रहस्यम्"
- "श्री गोरक्ष मन्त्र जाप विधि"
- "श्री नाथ सिद्ध कवचम्"
- "श्री गोरक्ष सूक्तम्"

आरती- प्रार्थना-नमस्कार इत्यादि विधि विधान करते समय निम्न कुछ लाभदायक विधियां करनी चाहियें

१. **मोक्ष- मुक्ति के लिये :** आपको इस ग्रन्थ विधि को रोज नित्य नियम से निःस्वार्थ अर्थात् विरक्त वृत्ति से तथा भक्ति भाव से करना चाहिये।

२. **अनुष्ठान :** आप तीन या सात या नौ या इक्कीस या इकतालीस दिन या सवा साल का अनुष्ठान करके मन्त्र जाप एवं पाठ कर सकते हैं।

३. **स्थान मकान में सुख, शान्ति एवं आनन्द के लिये :** इस ग्रन्थ विधि के प्रारम्भ में आपको एक धुपिया में गा गोबर के कण्डे एवे अंगार बनाकर विधि पाठ के बीच-बीच में उस पर थोड़ा-थोड़ा

उद-गुग्गल, गौ घृत, खोपरा, मिष्ठान इत्यादि सुवासिक पदार्थ डालते रहना चाहिये। अन्त मे आरती प्रार्थना के उपरान्त यह धुपिया अपने घर आंगन, स्थान मकान के चारों तरफ (घुमाकर) अंचवाकर पुनः पूजा स्थान पर रखना चाहिये। ऐसा करने पर घर में सुख-शान्ति एवं आनन्द मंगल का लाभ प्राप्त होगा।

विशेष-

१. पाठ ऊँची (प्रगट) आवाज में करें।
२. धुपिया इष्ट के पास रखनी चाहिये।
३. अन्त में धुपिया घर, मकान के अन्दर से बाहर करते हुए (अंचवाते हुए) बाहर दरवाजे तक लाना चाहिये।
४. अंचवाते हुए धूप के धुंए को दाहिने हाथ से अंचवाना चाहिये।

४. **बीमारी (शारीरिक या बाहरी) इलाज के लिये:** विधि के प्रारम्भ से अन्त तक एक ताम्र लोटे में या मृतिका के घड़े में पांच या नव नदियों का जल या त्रिवेणि संगम का जल भरकर रखें और पाठ के उपरान्त वह जल बीमार या रोगी को पिलावें । शारीरिक पीड़ा (बीमारी) से वह मुक्त हो जायेगा। यह विधि इकतालीस दिन अनुष्ठान से करें तो असाध्य बीमारी भी ठीक हो जायेगी।

विशेष-

१. पाठ ऊँची आवाज में करना चाहिये।
२. नदियों का जल शुद्ध, छानकर लेना चाहिये।
३. जल न प्राप्त हो तो गाय का कच्चा दूध मिट्टी के घड़े में ले सकते हैं।
४. प्रतिदिन ताजा दूध या जल लेना चाहिये।

५. यहां सात कुएं (जहां नारियां जल भरकर ले जाती हों) उन कुओं का जल का प्रयोग कर सकते हैं।

५. **कार्य सफलता के लिए:** विधि के प्रारम्भ में आपको एक ताम्र दीपक में सफेद यज्ञ पवित्र की बत्ती बनाकर लगायें उसमें गौ घृत डालें, तथा सुगन्धित इत्र (हिना) के तीन, सात या नौ बूंद डालकर उसे चेतन करें। दीपक के ऊपर एक टिन का फट्टा तिरछा लगायें जिस पर दीपक जोत की कालिख जमा हो सके। उस कालिख का काजल पाठ समाप्ति पर बनायें। कोई भी महत्वपूर्ण कार्य (कोर्ट- मुलाकात- नौकरी-कर्ज वसूली इत्यादि) के लिये जाते समय उस काजल का मस्तक पर तिलक लगाकर जायें, कार्य अवश्य सफल होगा।

विशेषः-

१. दीपक इष्ट के पास पाठ समाप्ति तक रखना चाहिये एवं चेतन रखना चाहिये।

२. दीपक विधि अनुष्ठान समय के अनुसार अखण्ड दीपक भी लगा सकते हैं।

३. तिलक मस्तक पर ऐसा लगायें जो सामने वाले व्यक्ति को दिखना चाहिये।

६. **वशीकरण के लिये:** पाठ करते समय अष्ठधातु या पंचधातु के पात्र में शुद्ध जल रखें उसके अन्दर वटवृक्ष की छोटी जड़ भिगो कर रखें यह सब इष्ट के सन्मुख गो घृत दीपक, धूप लगाकर रखें। पाठ के उपरान्त वटवृक्ष की जड़ उसी जल में पत्थर पर घिसें और उसमे पाठ करते समय जो धूप-अगरबत्ती लगायी थी उसकी भभूत उस घिसे हुए में मिलाये उसका तिलक मसत्क पर लगायें, सामने वाला वशीभूत होगा और आपका कार्य सफल हो जायेगा।

७. पाठ करते समय काली गौ का दूध छोटे पात्र में लेकर उसमें आपामार्ग वनस्पति की जड़ भिगोकर रखें । दीप, धूप लगायें। पाठ के उपरान्त उसी दूध में अपामाग जड़ को पीसकर डालें तथा थोड़ी भभूति डालें उसका तिलक मस्तक पर लगाकर जहां कहीं भी जायें लोग वश में हो जायेंगे।

८. पाठ करते समय सफेद मंदार को , छाया में सुखाकर काली गौ के कच्चे दूध में मिलाकर रखें पाठ में दीप-अगरबत्ती लगावें, उसकी भभूत मिलाकर उसका तिलक लगावें, कार्य सफल होगा।

९. पाठ के अन्तराल एक पात्र में लौंग सुपारी रखें और वह जिस व्यक्ति को पान में खिलावें वह मोहित हो जायेगा।

विशेषः-

१. पाठ ऊँची आवाज में करना चाहिये।

२. वशीकरण कार्य अच्छाई के लिए होना चाहिये। गलत कार्य के लिये इसका प्रयोग ना करें। अन्यथा उलटा असर होगा।

१०. भूत प्रेतादि पीड़ा हरण के लियेः यह सम्पूर्ण पाठ होने तक आपको करना चाहिये कि सात धान्य के आटे का दीपक बनायें उसमें पचरंगी सूत (पचरंगी धागा) की बत्ती बनाकर उसमें तिल्ली का या सरसों का तेल डालें ऊपर कालिख पकड़ने के लिये एक तिरछा टिन का फट्टा लगायें पाठ पूर्ण होने तक उसे चेतन रखें अन्त में उसी दीपक को उसी की कालिख लगाके उस भूत प्रेतादि बाहरी पीड़ा हुए व्यक्ति के ऊपर से सात बार उतारकर चेतन दीपक चौराहे पर रखें या बहते जल में (पत्तल की नाव बनाकर उसमें वह दीपक रखकर) प्रवाहित कर दें बाहरि बाधायें टल जायेंगी।

विशेषः-

१. पाठ ऊँची आवाज में करें।

२. दीपक इष्ट के पास रखें।

३. यह विधि शनिवार को या सोमवती अमावस्या, होली, दीपावली अमावस्या के दिनों में करें।

४. शाम को (सूर्यास्त के समय) करना उचित है।

११. गृह में बाधा निवारण के लियेः इस ग्रंथ पाठ जाप विधि के प्रारंभ में सात कुएं की मृतिका (जहां नारियां पानी भर कर ले जाती हैं) या सातनदियों की मिटट्ी (रेत) या सप्त मातृका, हाथी के स्थान की, घोड़े के तबेले की, दीमक (वाल्मिकी) की नदी संगम की, तालाब की, गौशाला की, राजद्वार की तथा चौराहे कि मृतिका यह मृतिका एक काले वस्त्र में बांधकार वह गठरी इष्ट के पास रखें व पाठ करें। पाठ अनुष्ठान कम से कम सात दिन का तथा ४१ दिन का करना चाहिये। पाठ समाप्ति पर यह मृतिका गठरी जिस घर-स्थान -मकान में दरवाजे के अन्दर से ऊपर बांधोगे वहां बाहरी विद्या, भूत प्रेतादि का घर में प्रवेश नहीं होगा ४१ दिन अनुष्ठान करोगे तो घर के अन्दर की सभी विपत्तियों का नाश होगा।

विशेषः

१. पाठ ऊँची आवाज में करना चाहिये।

२. मृतिका- शनिवार के दिन एकत्र करके लाना उचित होगा।

३. यह विधि शनिवार- अमावस्या-पूर्णिमा-होली इन दिनों करना लाभदायक होगा।

इस ग्रन्थ का मंत्र जाप-पाठ पठन आदि विधि घर-स्थानों में हमेशा करना अति उत्तम होगा जोकि घर में सुख-शान्ति का लाभ होगा।

१२- हवन विधि

आपको इस **"श्री नाथ सिद्ध कवचम्"** ग्रंथ की विधि विधान जप, मंत्र पाठ अनुष्ठान के उपरान्त श्री नाथजी का यज्ञ हवन करना चाहिये। हवन अनुष्ठान के अन्तिम दिन करना चाहिये। चाहे अनुष्ठान एक दिन का हो या ४१ दिन का हो, हवन अवश्य करें।

साहित्य: हवन पात्र (कुण्ड) ताम्र- पीतल या लोहा इत्यादि या ११ या २१ ईंटों का कुण्ड बनावें। रेता, गौ गोबर कण्डे, लकडो, लाल कच्चा धागा, कलश, हवन सामग्री पात्र तथा घी पात्र चम्मच, धूप दीप पुष्प अगरबत्ति, भोग इत्यादि।

विधि: इष्ट सन्मुख हवन पात्र या हवन कुण्ड स्थापित करें (साक्षी-स्वरुप) सद्गुरू नाम से कलश स्थापन करें बाकि साहित्य अपने सन्मुख लेवें। अत: प्रथम सतगुरू जी के कलश की एवं हवन कुण्ड की पंचोपचारे, पूजन-नमन करना चाहिये। एक पात्र में हवन सामग्री (सुगंधित) उसमें अक्षद् (चावल) और अष्टगंध मिलावें और एक पात्र में गौ का घी लेना

चाहिये । जो कि दोनों पात्र सन्मुख रखकर हवन कर सके।
अतः हवन कुण्ड में कण्डे- लकड़ी लगाकर गुरू मंत्र कहकर कर्पूर द्वारा अग्नि प्रज्वलित करें या इतरत्र जलती हुई धूनी से (अग्नि कुण्ड से)अग्नि लाकर अग्नि प्रज्वलित करें और निम्न प्रकार से हवन करना चाहिये।

हवन- इस ग्रंथ के प्रत्येक श्लोक (संस्कृत या हिन्दी) पढ़कर हवन करना चाहिये तथा प्रत्येक श्लोक के आखिर में नमः स्वाहाः कहकर गौ घृत और हवन सामग्री से हवन करना चाहिये।

उदाहरण-

गजाननमहं वन्दे गजकन्थड़रूपिणम्।
विघ्नहरण सदा नौमि ऋद्धि-सिद्धि-प्रदायकम् नमः स्वाहा।।

प्रथम श्री गणेश वन्दना तथा सतगुरू नाम से या सतगुरू मंत्र से हवन करना चाहिये तत्पश्चात् श्री गोरक्ष ध्यान और श्री गोरक्ष रहस्यम् के प्रति श्लोक को नमः स्वाहा कहकर हवन करना चाहिये।
अतः श्री गुरू गोरक्षनाथ जी के बीज मंत्र या बीजाक्षर मंत्र का अपने अनुष्ठान (दिनों के हिसाब से) अनुसार जितना जप किया हो उसके एक दशांश हवन (१/१० तर्पन, १/१० मार्जन १/१० दान करें)।

उदाहरण-

"ॐ शिव गोरक्ष नमः" या **"ॐ शिव गोरक्ष योगी"** इन मन्त्रों का एक घण्टे में एक हजार (१०००) बार जप होता है। इनका १/१० अर्थात् १०० बार हवन करना चाहिये। इसके पश्चात् आपको श्री नाथ सिद्ध कवचम् तथा श्री गोरक्ष सूक्तम् के प्रत्येक श्लोक (मन्त्र) का आखिर में नमः स्वाहा कहकर हवन इसका १/१० तर्पन इसका १/१० मार्जन इसका १/१० दानपुण्य करना चाहिये अंत में गुरू मंत्र का १०८ बार हवन करना चाहिये।
भोग- कच्चा रोट का भोग लगावें अन्त में आरती, प्रार्थना नमस्कार आदेश करना चाहिये।

समाप्ति (पूर्णाहूति)-एक पानी वाला नारीयल हवन में डालकर (गुरू मन्त्र से नमः स्वाहा कहकर) पूर्णाहुति करें।

हवन कुण्ड से भभूति छानकर नित्य उपयोग में लाना चाहिये यह अत्यंत लाभादायक होगी।

दान- अन्तिम दिन हवन पूर्णाहुति के पश्चात् आपको दान धर्म करना चाहिये। अपने-अपने समय एवं अर्थ प्राप्ति अनुसार दान धर्म करना चाहिये।

१. आप १०१ नाथ योगी, साधु, सन्त इत्यादि तथा ५१ सुहासिन और कन्याओं को भोजन, वस्त्रदान, धातुदान, गौदान कर सकते हैं।

या

२. नवनाथ, नव सुहासिन, पंच कन्याओं को भोजन, वस्त्रदान, धातुदान या गौदान कर सकते हैं।

या

३. मात्र १ महात्मा १ कन्या को भोजन दान, वस्त्रदान, या धातुदान या गौदान इत्यादि दान दे सकते हैं।

या

४. उपरोक्त-महात्मा नाथ सन्त कुमारी (कन्या) सुहासिन कुछ भी न मिले तो गौ को केलि के पान में भोजन देना।

या

५. अपने नजदीक गोरक्षनाथ मन्दिर में दान देना चाहिये।

इति "**श्री नाथ सिद्ध कवचम्**" समाप्त

****

१३- ग्रंथ अनुष्ठान विषय में कुछ नियम

१. यह श्री सिद्ध कवचम् आदि विधि सभी नाथ, साधु, सन्त नर-नारी भक्तगण बड़ी श्रद्धा से कर सकते हैं।

२. आपको सतगुरूजी की प्राप्ति हुई हो तो इस ग्रंथ विधि की अनुमती एवं मार्गदर्शन लेना चाहिये। अन्यथा ग्रंथ में दिये हुए मार्गदर्शन अनुसार विधि करना चाहिये।

३. अनुष्ठान पवित्र एकान्त स्थान में करना अति उत्तम है।

४. अनुष्ठान विधि निस्वार्थ (भक्तिप्रद) करना चाहिये।

५. ग्रंथ श्लोक कण्ठस्थ करना चाहिये।

६. ग्रंथ के संस्कृत श्लोक पढ़ें या तो केवल हिन्दी अनुवाद (टीका) पढ़कर पाठ कर सकते हो। संस्कृत श्लोकों का पाठ करना उत्तम है।

७. विशेषत: ४१ दिन या सवा वर्ष (१५ मास) अनुष्ठान करना उचित है। जिसमें कुछ नाथ सिद्धों की अवश्य अनुभूति हो सकती है।

८. ग्रन्थ की सम्पूर्ण विधि करते समय अन्तराल में अगर आपको (साधक को) किसी आवश्यक कार्य के लिये उठना पड़ा अर्थात आसन छोड़ना चाहते हो तो अपने आसन के ऊपर एक पानी वाला नारीयल (लाल धागा लपेटा हुआ) रखकर आसन छोड़ सकते हो, वापसी आने पर नारियल हटाकर पुन: आसन ग्रहण कर सकते हो, केवल एक बार करना चाहिये बार-बार नहीं।

९. अनुष्ठान एक आसन पर पूर्ण अखण्ड करना अति उत्तम है।

१०. इस विधि अन्तराल में आप व्रत भी कर सकते हो, या अल्पाहार या दूध-फलाहार ले सकते हैं या दिन में केवल एक बार ही भोजन करना नियम कर सकते हैं।

११. भोजन, भजन, शयन, जप-तप साधना विधि इत्यादि सभी कर्म धरती ऊपर ही करना उत्तम है।

१२. अनुष्ठान पूर्णता तक शक्यतो हजामत निषिद्ध है तथा नारियों को शुद्ध काया में विधि करना या श्रवण करना चाहिये।

१३. अनुष्ठान पूर्ण होने तक सांसारिक भोगों से तथा व्यसन/ नशाओ से दूर रहना चाहिये।

१४. भक्ति या श्रद्धा से हमेशा यह विधि विधान करना चाहते हो तो हर महीने की पूर्णिमा-अमावस्या तथा हफ्ते में रविवार या सोमवार के दिन या अच्छा मुहूर्त पर ही यह विधि कर सकते हैं। गुरुपुष्यामृत योग-सर्वार्थ सिद्ध योग, अमृत सिद्धि योग रवि पुष्यामृत, योग सर्वोत्तम दिन गुरू पूर्णिमा का है। इस दिन अवश्य करें।

१५. घर परिवार के सभी सदस्य मिलकर यह विधि कर सकते हैं। एक सदस्य पाठ विधि करे बाकि सदस्य श्रवण कर सकते हैं।

१६. श्री नाथ जी के जागरण (रात्रि जागरण उत्सव) या ज्योत जागरण उत्सव में यह पाठ विधि करना चाहिये।

१७. सार्वजनिक धार्मिक उत्सव में भी यह विधि कर सकते हैं।

१८. सम्पूर्ण नाथ सिद्धों की विधियाँ धर्म-कर्म अच्छे कार्य, सात्विक उद्देश्य से करना सर्वोत्तम साधना है।

समाप्त

१४- संक्षिप्त विधि

निम्न पाठ विधि को हमेशा साथ रखना चाहिये और प्रतिदिन पढ़ना चाहिये इससे आपको शारीरिक एवं मानसिक शान्ति तथा उन्नति की प्राप्ति होगी।

प्रार्थना

गोरक्षनाथाय भद्राय शिवस्वरूपाय वेदसे।
शिव गोरक्षनाथाय शिष्य मत्स्येन्द्राय च नमः।।

भावार्थ– हे कल्याणमयी गुरू गोरक्षनाथ जी आप शिव स्वरूप से जाने जाते हो ऐसे मत्स्येन्द्रनाथ जी के शिष्य, शिव गोरक्षनाथ जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्री नाथ वन्दना

दक्षिणे बिरबंकस्य वामे च नाथ भैरवाः।
पुरतो आदिनाथस्य तं वन्दे गुरू गोरक्षम्।।

भावार्थ– जिनके दक्षिण भाग में बीरबंकनाथ (हनुमान जी) हैं, उत्तर भाग में भैरवनाथ हैं एवं पूर्व भाग में सिद्ध आदिनाथ जी हैं। ऐसे गुरू गोरक्षनाथ जी को मैं वन्दन करता हूँ, नमस्कार करता हूँ।

श्री सिद्ध प्रार्थना

ॐकार नाथं त्रिकालज्ञानी,
गोरक्ष मीन नाथवंश सिद्धम्।
अनन्त कोटी नवनाथ सिद्धम्,
कुर्वन्तु सर्वेमम् सुप्रभातम्।।

भावार्थ– हे त्रिकालज्ञानी ॐकार आदिनाथ जी एवं गुरू गोरक्षनाथ जी और मीन (मत्स्येन्द्र) नाथ जी तथा नाथ वंश (परम्परा) के सिद्ध तथा अनन्त कोटि, नवनाथ सिद्धों आप सर्वे मेरी प्रातः (सुबह) सुमंगल करें।

"ॐ शिव गोरक्ष"

गोरक्षं गों रक्षकमञ्च,
योगा रूढः ज्योति र्मयम्।
शिव ध्यानं सदा तत्पर,
तं वन्दे गोरक्षं गुरूम्।।

भावार्थ– हे गुरू गोरक्षनाथ जी आप गो इन्द्रियों की रक्षा करने वाले, ज्योतिर्मय योग में आरूढ़ रहते हो। आप सदा सर्वदा (अलख निरन्जन) शिव के ध्यान में तत्पर रहते हो आप गुरू गोरक्षनाथ जी को मैं वन्दना करता हूँ (नमस्कार) करता हूँ।

"ॐकार गोरक्ष"

ॐकार ज्योर्तिगोरक्षं नित्यं ध्यायन्ती योगिनः।
मुक्तिं च मोक्षदां चैव गोरक्षाय नमो नमः।।१।।
अनन्त कोटी ब्रह्माण्ड गोरक्षं सचराचरम्।
दर्शनम् मुक्तिलाभं च तस्मै श्री गोरक्षाय नमः।।२।।

भावार्थ– ॐकार ज्योतिस्वरूप गुरू गोरक्षनाथ जी योगीजन आपका नित्य ध्यान प्राप्त करते हैं और मोक्ष–मुक्ति को प्राप्त करते हैं, उस गुरू गोरक्षनाथ जी को मैं नमस्कार करता हूँ। बारंबार नमस्कार करता हूँ।। १।। इस अन्नत कोटी ब्रह्माण्ड में सचराचर में श्री गुरू गोरक्षनाथ जी विद्यमान हैं उनके दर्शन मात्र से मुक्ति का लाभ होता है। उन गुरू गोरक्षनाथ जी को मैं नमस्कार करता हूँ।। २।।

"गोरक्ष भजन"

भज गोरक्षम्, भज गोरक्षम्।
गोरक्षम् भज मूढ़मते।।

भावार्थ– गुरू गोरक्षनाथजी का भजन करो, बारंबार भजन करो हे मूढ़ मते! गुरू गोरक्षनाथ जी का भजन करो।

"क्षमा प्रार्थना"

आऽऽसनं न जानामि न जानामि तव साधनम्।
ध्यानं चैव न जानामि क्षम्यतां योगेश्वरः।।१।।
योगहीनं, ध्यानहीनं भक्तिहीनं जतीश्वरः।
तन्त्रहीनं क्रियाहीनं मुद्राहीनं महेश्वरः।।२।।
मन्त्रहीनं जपहीनं तपहीनं तपीश्वरः।
यत् सेवित मया नाथम् परिपूर्ण तदस्तुमे।।३।।

भावार्थ– हे श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी मैं आपके आसनों और आपकी सभी साधनायें कैसे करते हैं, यह नहीं जानता हूँ और हे योगेश्वर मैं आपके ध्यान एवं स्तुति भी नहीं जानता हूँ। हे जतीश्वर! मैं योगीहीन, ध्यानहीन एवं भक्तिहीन हूँ। हे महेश्वर मैं तन्त्रहीन, क्रियाहीन एवं मुद्राहीन हूँ। हे तपीश्वर मैं मन्त्रहीन, जपहीन, तपोहीन अतः मुझे क्षमा कीजिए। तथा मैं अपने सामर्थ्य और ज्ञान से मेरी सेवा (पूजा) आपको अर्पण करता हूँ जिसे आपकी महती कृपा ही परिपूर्ण बना सकती हैं।

"शान्ति पाठ"

निरञ्जन निराकारो निर्विकल्पञ्च सततध्यानम्।
शून्य शून्यमादाय आत्मानन्दाय शून्यम्।।
ॐ शान्ति! शान्ति! शान्ति!

भावार्थ– ध्यान अवस्था में, निरन्जन निराकार एवं निर्विकल्प की स्थिति में सब कुछ शून्य अवस्था में जो कि ध्यान के आत्मानन्द (आत्म आनंद) आत्मानुभव आत्म दर्शन की अवस्था भी जब शून्यमय हो जाती है। बस शान्ति तो इसी अवस्था में प्राप्त होगी, अन्य किसी भी उपाय से शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती अर्थात् शाश्वत् शान्ति के लिए साधना द्वारा परिपक्व अर्थात् शून्यमय ध्यान ही श्रेष्ठ उपाय है। जिसका इष्ट केवल श्री गुरू गोरक्षनाथ जी ही हैं।

इति ॐ शान्ति! शान्ति! शान्ति!

रचना–

योगी विलासनाथ

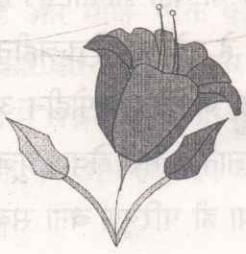

१५-गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर (हरिद्वार) के अंतर्गत कुछ प्रचलित श्लोक

संस्कृत-

यस्मात्मत्स्योदराज्ञातो योगिनां प्रवरोह्ययम्।
तस्मात्तु मत्स्यनाथेति लो ख्यातो भविष्यति।।

(स्कन्द पुराण)

भावार्थ- हे देवी यह बालक इस मत्स्य से प्रकट हुआ है, तथा यह सर्व योगियों में श्रेष्ठ है। इसी कारण से इसका नाम मत्स्येन्द्रनाथ जी होगा।

आदिनाथो गुरूर्यस्य गोरक्षस्य च यो गुरूः।
मत्स्येन्द्रं तमहं वन्दे महासिद्धं जगदगुरूम्।।

(नारद पुराण)

भावार्थ- मैं महासिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ जी को वन्दना (आदेश) करता हूँ जिसके गुरू आदिनाथ शिव हैं। वे गोरक्षनाथ जी के गुरू हैं।

अहमेवास्मि गोरक्षः मद्रूपं तन्निबोधत।
योगमार्ग प्रचाराय मया रूपमिदं धृतम्।।

(कल्पद्रुमतंत्र)

भावार्थ– देवताओं के पूछने पर भगवान शिव ने कहा–मैं साक्षात् गोरक्षनाथ हूँ एवं गोरक्षनाथ मेरा ही स्वरूप है। योगमार्ग अभ्युदय (प्रचार प्रसार) के लिए इस रूप को मैंने धारण किया है।

पुराणं भारतं वेदाःधर्मशास्त्राण्यनेकशः।
पुत्रदारादि संसारी योग मार्गस्य विघ्नकृत।।

भावार्थ– भारत धर्म के चारों वेद, अठ्ठारह पुराणों तथा शास्त्रों में कहा गया है कि पुत्र, पत्नी, रिश्तेदार, सम्बन्धी तथा मित्रादि यह सभी संसारी मायाधारी लोक जाति के योग मार्ग में विघ्न समान है।

आत्मेति परमात्मेति जीवात्मेति विचारणे।
त्रयाणामैक्य सम्भूति आदेश इति कीर्तितः।।

भावार्थ– "आदेश" उच्चारण से ब्रह्मस्वरूप का प्रतिपादन होता है आत्मा–परमात्मा और जीवात्मा के संबंध में विचार करने पर ज्ञात होता है कि तीनों की एकता की सम्भूति उत्पत्ति(अभिन्न सत्ता) ही आदेश है अर्थात आदेश कहने पर एक दूसरे की जीवात्मा और परमात्मा–आत्मा के तादात्म्य का स्मरण होता है।

गोरख बाणी

मरो वे जोगी मरो, मरण है मीठा।
तिस मरणी मरो जिस मरणी गोरख मरि दीठा।।

भावार्थ– हे योगी। मरो, साधना के द्वारा जीवनमुक्ति अवस्था में स्थित होकर अमृतपान करो ऐसे समस्त माया जगत से मर कर (शून्य समाधि में)

अमृतपान करो। वह बडा ही मीठा है। हे योगी उस मृत्यु अमरता का अनुकरण करो जिसके मैंने (गोरक्षनाथ जी ने) मृत जीवनमुक्त होकर अमृत (अमरता का पथ पाया है। परब्रह्म परमात्मा अलख निरन्जन का साक्षात्कार किया है।।

हबकि न बोलिबा, ठबकि न चलिबा, धीरे धरीवा पावं।
गरब न करिबा, सहजै रहिबा, भणत गोरष रावं।।

भावार्थ– बिना सोचे समझे, और कार्य का परिणाम दर्शन किये बिना ही अचानक किसी विषय में नहीं बोलना चाहिये, चलने से (योगमार्ग में) सावधान (बाधाओं से) रहना चाहिये तथा मन को उन्माद नहीं होना चाहिये। गर्व, अभिमान, काम, क्रोधादि से सावधान (संयमी) होकर चलें, योगी को सामान्य जीवन, स्वाभाविक तथा सरल जीवन अपनाना चाहिये ऐसे गुरू गोरक्षनाथजी कहते आये हैं।।

गोरक्ष कहै सुण हरे अवधू, जग में ऐसै रहणां।
आंषे देषिबा, कानै सुणिबा, मुष थै कछु न कहणा।।

भावार्थ– गुरू गोरक्षनाथ जी कहते हैं हे अवधूत योगी इस संसार जगत में इस माया सागर में तुम्हें इस प्रकार रहना चाहिये कि जगत के द्वंदात्मक सुख-दुख, दिन-रात, शीत-उष्ण इत्यादि मोह-माया, काम-क्रोधादि इन सभी माया से दूर रहकर तटस्थ रहकर द्रष्टा रहकर आखों से सिर्फ देखना, उन्हें कानों से सिर्फ सुनना किन्तु मुख से कभी कुछ नहीं कहना, मौन रहना। अपना विचार व्यक्त नहीं करना चाहिये।

आसन दृढ़, आहार दृढ़, जो निद्रा दृढ़ होय।
नाथ कहें सुन बालका, मरे ना बूढ़ा होय।।

भावार्थ– गोरक्षनाथजी कहते हैं कि हे अवधू जिसका आसन आहार और निद्रा दृढ़ है, संयमित है, समतोल है, वह ना कभी मरता है ना बूढ़ा होता है किन्तु हमेशा बालक समान रहता है।

शिव गोरक्ष यह मन्त्र है, सर्व सुखों का सार।
जपो बैठ एकान्त में, तन की सुधी बिसार।।

भावार्थ- **"ॐ शिव गोरक्ष योगी"** यह मन्त्र जगत के सर्व सुखों का सारांश है। लाभदायक है इसलिए एकान्त में आसन दृढ़ करके बैठो और उसका जप (मनन, चिन्तन) करो जिससे आप अपने माया तो क्या काया इन्द्रियों मन चित्त को भी भूल जावोगे। वे सारे खत्म होंगे शून्य हो जायेंगे वही आप का ध्यान है वही समाधि है।।

शिव गोरक्ष शुभनाम में, शक्ति भरी अगाध।
लेने से हैं तर गये, नीच कोटि के व्याध।।

भावार्थ-**"ॐ शिव गोरक्ष योगी"** इस शुभनाम मन्त्र में अतिशय विराट-अगाध शक्ति है। अगर नीच, अधम, दुष्ट ने भी इस नाम मन्त्र का जाप किया चिन्तन किया या संकीर्तन किया तो वह सब इस माया संसार-सागर से तर जायेंगे, पार हो जायेंगे।

अजपा जपे शून्य पर धरे, पांचों इन्द्रिय निग्रह करे।
ब्रह्म अग्नि में होमे काया, तासु महादेव बन्दे पाया।।

भावार्थ- श्री गुरू गोरक्षनाथजी कहते हैं कि हे अवधू हमेशा आसन में बैठकर जपा-अजपा द्वारा जप (मनन, चिन्तन) करो, ध्यान करो जब पांचों इन्द्रिय (नाक, कान, आँख, जिह्वा एवं त्वचा) इनका निग्रह करके अर्थात् इन्हीं को स्थिर करके जब आप ध्यान लगाकर एवं जप प्राणायाम करके नाभि कमल में अग्नि उत्पन्न होती है जैसे काया को होम (धुने में) तपा रहे हों, जिसने इस प्रकार काया को तपाया वह अवधू परम परमेश्वर महादेव का बन्दा हो गया। वह शिव पद को प्राप्त कर लेता है।।

मन मूरख समझे नहीं, योगमार्ग की बात।
अति चंचल भटकत फिरे, करे बहुत उत्पात।।

भावार्थ- इस जीव जगत में जीव का मन अति मूरख है, जो कि वह संसारिक मोह माया में भटक रहा है। ध्यान, योग, साधना जैसी संजीवनी उसके पास है लेकिन उसका चंचल मन हमेशा भटकता है और अपना मन बुद्धि इन्द्रियों पर संयम न होने के कारण उसका यह चंचल मन बड़े से बड़े उत्पात करता फिरता है। जिससे उस जीव को केवल क्लेश मिलता है वह पाप का भागी होता है अगर वह योग साधना करे तो वह इस संसार सागर से पार होकर मोक्ष-मुक्ति तक जा सकता है।।

मन मन्दिर में वास है, पाप पुण्य का ज्ञान।
पुण्य रूप मन शुद्ध है, पाप अशुद्ध महान।।

भावार्थ- इस जगत संसार के सभी अच्छे-बुरे कर्म, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य आदि जैसी अनेक बातें जो यह मन उसके कभी सुख को पाता है तो कभी दुःख को पाता है । ऐसे पाप पुण्य का इस मन के मन्दिर में हमेशा वास रहता है, निवास रहता है। लेकिन जिसका मन शुद्ध है सात्विक है चैतन्यमय है, निर्मल है, वह मन पुण्य रूप माना गया है और जो मन में पाप है, अधर्म है अन्याय है, डर है, वासनायें हैं, वह तामसी हो अशुद्ध है वह मन पापी रूप है। अतः योग करो साधना जप ध्यान करो जिसमें मन शुद्ध, चैतन्यमय निर्मल शील सन्तोष इत्यादि से आप ब्रह्मानन्द का आनंद ले सकेंगे।।

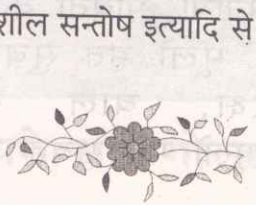

१६- भजन

शिव जती गोरक्ष

ॐ शिव जती गोरक्ष, बाल जती गोरक्ष
रट मन आठों याम, भूलो मत सुबह और शाम।। टेक।।

नवनाथों में नाथ कहावे। क्यूं नहीं हमको पार लगावे।
अलख पुरूष निर्वान, भूलो मत सुबह और शाम।।
शिव जती गोरक्ष, बाल जती गोरक्ष।
रट मन आठो याम, भूलो मत सुबह और शाम।।१।।

रावल सतगुरु सुमिरन कीनो, कञ्चन काया पल में दीनो।
दिया अमरपद ज्ञान, भूलो मत सुबह और शाम।।
शिव जती गोरक्ष, बाल जती गोरक्ष।
रट मन आठो याम, भूलो मत सुबह और शाम।।२।।

गोपिचन्द भर्तृहरि राजा, छोड़ दिये सब राज समाना।
लगा अलख संग ध्यान, भूलो मत सुबह और शाम।।
शिव जती गोरक्ष, बाल जती गोरक्ष।
रट मन आठो याम, भूलो मत सुबह और शाम।।३।।

शिव ने गोरक्ष रूप बनाया, पार्वती का भरम मिटाया।
दिया योग का ज्ञान, भूलो मत सुबह और शाम।।
शिव जती गोरक्ष, बाल जती गोरक्ष।
रट मन आठो याम, भूलो मत सुबह और शाम।।४।।

जो कोई तुम्हरी शरण में आयो, मनवांछित फल पूर्ण पायो।
हो गये पूर्ण ज्ञान, भूलो मत सुबह और शाम।।
शिवजती गोरक्ष बाल जती गोरक्ष।
रट मन आठो याम, भूलो मत सुबह और शाम।।५।।

उपरोक्त यह भजन नाथ सम्प्रदाय में अतिप्रिय भजन है। नाथ योगी सब मिलकर यह भजन गाते हैं। संध्या-सत्संग में जागरण में यह भजन आप गा सकते हैं।

"आगे, आगे गोरख जागे"

१७- भजन-श्री नाथ दर्शन

सत गुरु मेरे कृपा जो कीजिए।
गुरु गोरक्ष के दरश दिखाए।।
अनन्त सूर्य के तेज समाए।
अनूप रूप जो दिख्या न जाए।।
हात खर्पर तुम अलख जताए।
नाथ कुल की रीत बताए।।
ऋद्धि सिद्धियां फेर लगाए।
दीप, कलश जल मंगल गाए।।
काल जीत पर अमरता पाए।
सब भूपन को शिष्य बनाए।।
आई माया संग सहेली।
हरष मन तज त्याग विरागी।।
कानन कुण्डल नाद पवित्रि।
जती सती जन आये बाराती।।
ॐकार नाद में शंख ही बाजै।
नवनाथ सहित गोरक्ष विराजे।।
धन्य धन्य नवनाथ चौरासी।
धन्य सिद्ध सब अनंत कोटी।।
गुरु मछंदर गोरखबानी।
नाथ सिद्ध ने सिद्ध कर जानी।।
वायु लोक में बजत बधाई।
नाथ विलास में नम्र हो गाई।।

नाथजी गुरुजी को आदेश-आदेश।।

१८- उपसंहार

योग सनातन सिद्ध का,
किया प्रारंभ ॐकार।
आदिनाथ संग शक्ति ने,
प्रगटा ज्ञान प्रकाश।।१।।

गुरू मछन्दरनाथ ने,
दिया ज्ञान प्रमाण।
जती गोरख योग का,
उचा गगण विहार।।२।।

नवनाथ चौरासी सिद्ध ने,
जन मानस मन जीत।
गुरु-शिष्य परमात्म की,
जोड़ दी है प्रीत।।३।।

सद्गुरु आनन्दनाथ जी,
कीजो कृपा अपार।
शिष्य नाथ विलास ने
किया काव्य साकार ।।४।।

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ

योगी महासभा

—: पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार-249401 (उत्तराखण्ड)

फोन : 01334-226583

web site : www.yogigorakshnath.org

e-mail : media @ yogigorakshnath.org

सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह. जिला रोहतक (हरियाणा), फोन : 234804

—— नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन ——

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
1. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (सम्पूर्ण शाबर मन्त्र तन्त्र नित्यकर्म इत्यादि विधि विधान का विवरण ग्रंथ (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	180/-
2. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-4) श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल (योगमाया पूजन पद्धति का विस्तृत विवरण) (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	250/-
3. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (अंग्रेजी अनुवाद)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	400/-
4. श्री नवनाथ (हिन्दी) (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि तथा अपेक्षित कार्य पूर्ति-विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	55/-
5. श्री नाथ सिद्ध कवचम् (हिन्दी) (अपेक्षित कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा कवच के लिये पाठ हवन के विधान)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
6. श्री नाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	125/-
7. श्री नाथ सिद्ध पाठ (नाथ सिद्ध पाठ, गोरक्षनाथ तंत्र-मंत्र शबदी आरती, भजन इ. विधि विधान सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	35/-
8. श्री प्राचीन भर्तृहरी गुफा महात्म्य (देश-विदेश के नाथ सिद्धों के तीर्थ स्थलों के पते/ विवरण)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	30/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
9. श्री गोरक्ष नाथ सिद्ध चालीसा (सरल हिन्दी अनुवाद स्तुति एवं आरती विधि सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	6/-
10. श्री गोरक्ष तंत्रम (सरल हिन्दी अनुवाद तंत्र-मंत्र विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	50/-
11. श्री नाथ सिद्धों के मंत्र-तत्र टोटके	महावीर सैनी (गुरु योगी विलासनाथ जी पुजारी)	120/-
12. योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय	योगी भंभूलनाथ जी	30/-
13. गोरक्ष स्तवांन्जलि	योगी भंभूलनाथ जी	12/-
14. श्री गोरक्ष सहस्त्र नाम स्तोत्र	योगी भंभूलनाथ जी	36/-
15. शब्दावली व भजन	योगी भंभूलनाथ जी	10/-
16. भर्तृहरि निर्वेदनाटकम्	महाकवि हरिहर रचित	5/-
17. अनुभव भजन माला	भोलानाथ जी योगी	10/-
18. गुरु गोरक्षनाथ शब्दावली (भजन)	महन्त सेवानाथ जी	15/-
19. श्री नाथ चरित्र	योगी वीरनाथ जी	70/-
20. सिद्ध प्रयोग चिकित्सा	योगी वीरनाथ जी	8/-
21. श्री बाबा मस्तनाथ चरित्र	योगी शंकरनाथ जी	20/-
22. अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास	योगी शंकरनाथ जी	100/-
23. श्री बाबा मस्तनाथ कथा	रामेश्वरनाथ जी	15/-
24. चन्द्रावतार सिद्ध चौरंगीनाथ (पूरण भगत)	शिवानी शर्मा	35/-
25. दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरुदेव	शिवानी शर्मा	100/-
26. श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ चालीसा	शिवानी शर्मा	10/-
27. श्री बाबा मस्तनाथ सहस्त्र नाम	शिवानी शर्मा	20/-
28. श्री मस्तनाथ चरितम् (बड़ी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	100/-
29. श्री मस्तनाथ चरितम् (छोटी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	30/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
30. गोरखबाणी	रामलाल श्रीवास्तव	50/-
31. गोरख चरित्र	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
32. गोरख दर्शन (हिन्दी फिलॉसफी)	अक्षय कुमार बेनर्जी	90/-
33. गोरख दर्शन	विजय पाल	50/-
34. श्री नाथ सिद्ध चरितामृत	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
35. गोरक्षनाथ एवं उनकी परंपरा का साहित्य	डा. दिवाकर पाण्डेय	40/-
36. आदर्श योगी	अक्षय कुमार बेनर्जी	25/-
37. योगासन	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
38. सिद्ध सिद्धान्त पद्धत	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
39. गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह	रामलाल श्रीवास्तव	40/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
40. हटयोग प्रदीपिका	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
41. योग बीज	रामलाल श्रीवास्तव	15/-
42. नाथ योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	15/-
43. अमनस्क योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	20/-
44. गोरक्ष पद्धति	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
45. गोरक्ष शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
46. वैराग्य शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
47. गौरक्ष वैदिक पूजा पद्धत	वेदाचार्य रामानुज त्रिपाठी	20/-
48. विचार दर्शन (युग पुरुष महन्त दिग्विजय नाथ...ने कहा)	योगी आदित्यनाथ	20/-
49. प्रताप असी बावणी (कविता संग्रह)	मनोहर द्विवेदी	15/-
50. योगवाणी अंक (गोरखबाणी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
51. योगवाणी (गोरक्ष चरित्र दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
52. योगवाणी (नाथ सिद्ध चरित्रांक)	गोरखनाथ मन्दिर	40/-
53. योगवाणी (शिव संहिता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
54. योगवाणी (सिद्ध दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
55. योगवाणी (नाथ तीर्थ स्थल)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
56. योगवाणी (नाथ सिद्ध बानी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
57. योगवाणी (गोरक्ष सिद्धान्त)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
58. योगवाणी (गोरक्ष ग्रन्थावली)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
59. योगवाणी (मत्स्येन्द्रनाथ अंक)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
60. योगवाणी (सर्व धर्म समभाव)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
61. योगवाणी (राष्ट्रीय एकता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
62. योगवाणी (विशेषांक 1994)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-

कैसेट

गुरु गोरक्षनाथ चालीसा (भाग 1)	गायक - सोमनाथ शर्मा	30/-
चौरासी सिद्ध चालीसा (भाग 2)	गायक -सोमनाथ शर्मा	30/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
बाबा मस्तनाथ चमत्कार एवं महिमा भजन(1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 भाग)		प्रत्येक 25/-
अन्य नाथ सम्प्रदाय की भजन कैसेटें		35/-

MP3-DVD-VCD (सी.डी.)

		MP3	DVD-VCD
अमृतांजलि (भाग-1) गोरक्ष चालीसा,भजन इत्यादि	गायक-सोमनाथ शर्मा	35/-	50/-
अमृतांजलि (भाग-2) चौरासी सिद्ध चालीसा,भजन इ०	भजन रचना-योगी विलासनाथ	35/-	50/-
श्री नाथ सिद्ध पाठ भजन (भाग-1+2)	रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री गोरक्ष वन्दना, भजन	रचना-योगी विलासनाथ	35/-	50/-
श्रीनाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)कम्प्यूटर फ्लॉपी	रचना-योगी विलासनाथ	45/-	

कैलेण्डर फोटो

विवरण	साईज	कैलेण्डर फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	20 " X 14 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (ब्रह्माण्ड)	22 .5" X 17. 5 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	14 " X 9 "	15/-	80/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	10 " X 7 "	10/-	40/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	7 " X 5 "	5/-	25/-
आगे-आगे गोरख जागे	16.5 " X 39. 5 "	30/-	225/-
बाबा मस्तनाथ जी	7 " X 5 "	3/-	25/-
बाबा मस्तनाथ जी	30 " X 17 "	10/-	-
श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन	22 .5" X 17. 5 "	25/-	225/-
पोस्टकार्ड साईज फोटो	5"X3.5"	3/-	-

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र
(विधि विधान द्वारा सिद्ध किये हुये)

साईज	ताम्बा (मूल्य)	तांबा (सिल्वर पॉलिश) मूल्य
3 X 3 इंच	40/-	50/-
5 X 5 इंच	60/-	70/-
7 X 7 इंच	85/-	100/-
9 X 9 इंच	250/-	265/-
12 X 12 इंच	290/-	310/-

कैमरा फोटोग्राफ

गुरु गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ, बाबा सुन्दरनाथ, बाबा बालकनाथ, रतननाथ, नवनाथ,भैरव, ज्वालाजी, मृत्युंजय आदि सभी नाथ सम्प्रदाय-प्रासंगिक (चरित्रानुरुप) कैमरा फोटो।

साईज	कैमरा फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
छोटे फोटो P/C=5 " X 3.5"	5/-	-
बड़े फोटो B/C=7 " X 5"	10/-	35/-
नवनाथ स्वरुप B/C=7 " X 5"	10/-	35/-
आगे आगे गोरख जागे BB/C=10"X5"	25/-	
बड़ा फोटो BBB/C=10" X 8"	35/-	-

यन्त्र (आर्ट पेपर पर रंगीन प्रिन्टेड)

यन्त्र विवरण	आर्ट पेपर पर प्रिन्टेड	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र	5/-	65/-
सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र	5/-	65/-
श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र	5/-	65/-
धरत्री गायत्री यन्त्र	5/-	65/-
उपरोक्त चारो यन्त्रों का सैट	20/-	250/-

शीशे के फ्रेम, मन्दिर

गुरु गोरक्षनाथ तथा बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (3 X 2 इंच, 5 X 3.5 इंच, 7 X 5 इंच)	20/-, 50/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के शीशा मन्दिर (बिजली) लाइट वाले	100/-, 200/-, 220/-, 500/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (गाड़ियों में बैटरी चालित, लाईट वाले)	150/-

लॉकेट, चाबी-छल्ले, कुण्डल इत्यादि

लॉकेट (गुरु गोरक्षनाथ जी एवं बाबा मस्तनाथ जी के)	3/-, 5/-, 6/-, 20/-, 15/-, 25/-, 30/-
गुरु गोरक्षनाथजी एवं बाबा मस्तनाथजी के फोटो युक्त चाबी छल्ले एवं लॉकेट (नादि पवित्री, चन्दन लकड़ी, शीशे, पीतल, तांबे, प्लास्टिक इत्यादि)	5/-, 8/-, 10/-, 12/-, 20/-, 30/- 25/-, 10/-, 40/-, 40/-, 20/-, 60/-
कुण्डल शीशा तथा रंगीन प्लास्टिक में	25/-, 30/-, 40/-
कुण्डल तारा मण्डल, चाइनीज बिलौरी पत्थर के आदि धातुओं में तथा रुद्राक्ष माला, कड़े इत्यादि	200/-, 500/-, 800/-, 1000/-
शंख (दक्षिण मुखी) प्रिन्टेड गोरक्षनाथ जी के चित्र	250/-
कौड़ी के ऊपर प्रिन्टेड गुरु गोरक्षनाथ जी के चित्र	50/-

मूर्तियाँ

नाम	साईज	वजन	मूल्य पीतल	मूल्य ब्रास (पीतल की पालिश)
1. गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	9"	2 Kg	1100/-	800/-
2. गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	6"	1 Kg.	800/-	700/-
3 आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	10"	1.300gm.	900/-	600/-
4. आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	6"	600gm.	300/-	
5. बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	9"	2 Kg.	1100/-	800/-
6. बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	6"	1 Kg.	800/-	700/-

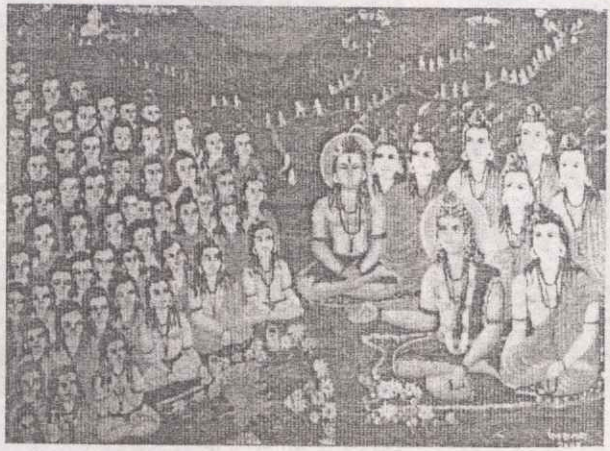

(मूल्य सूची में समयानुसार परिवर्तन सम्भव है।)

नोट- मूल्य + पार्सल खर्च मनीऑर्डर या संस्था के नाम **D. D.** भेजने पर साहित्य पोस्ट द्वारा **V.P. L., V.P.P.** से भेजा जायेगा।
अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का आर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।

-: पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार-249401 (उत्तराखण्ड), फोन : 01334-226583

श्री सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह॰ जिला रोहतक (हरियाणा), फोन : 234804

पश्चिम
श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)
(प्राचीन भर्तृहरि गुफा)
मनसा देवी
मन्दिर
मनसा माता पैदल मार्ग
उड़नखटोला
रेलवे स्टेशन
बस स्टैण्ड
शिवमूर्ति चौक
अपर रोड
कनखल रोड
दक्षिण
उत्तर
भीमगोडा रोड
कनखल रोड
मोती बाजार
बड़ा बाजार
सुभाष घाट
गंगा घाट
पतित पावनी माँ गंगा जी
गऊघाट पुल
संजय पुल
हरकी पौड़ी ब्रह्मकुण्ड
पूर्व

राजा भर्तृहरि श्रृंगार शतक, नीति शतक व वैराग्य शतक तीनों के रचयिता थे। श्री योगाचार्य गुरू गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। राजा भर्तृहरि ने उज्जैन-मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण कर यहां तपस्या की थी। उस समय से यह गुफा व मन्दिर यहां विद्यमान है। राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से हर की पैड़ी का निर्माण किया था।

नोट : हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

-: पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

Visit us at: www./yogigorakshnath.org, e-mail:media@yogigorakshnath.org
Ph. 01334-226583

मुद्रक- शिव शक्ति प्रिन्टर्स, अपर रोड, हरिद्वार। फोन-228796